अगस्त 2024

अंतरिक्ष में भारत के बढ़ते कदम..

मन की बात

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

सूची क्रम

01 प्रधानमंत्री का सन्देश 1

02 मुख्य आलेख

2.1 **राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस :** भारत की अंतरिक्ष यात्रा का सम्मान 14

2.2 **कचरे से कंचन :** स्थायित्व का दिशानिर्देश 22

2.4 **विश्व संस्कृत दिवस :** समाज का हित, संस्कृत में निहित 38

2.5 **फिट इंडिया मूवमेंट :** स्वस्थ और श्रेष्ठ भारत के लक्ष्य की ओर 44

03 संक्षेप में

3.1 अंतरिक्ष क्षेत्र में बढ़ती सम्भावनाएँ 18

3.2 स्टार्टअप उद्योगों द्वारा भारत की सतत क्रांति का नेतृत्व 26

3.3 पोषण माह : स्वास्थ्य की मजबूत नींव की दिशा में प्रभावी कदम 36

3.4 तेलुगु : भाषा और संस्कृति की विरासत 48

3.5 वन्यजीव संरक्षण में क्रांतिकारी बदलाव 52

04 लेख/साक्षात्कार

4.1 अंतरिक्ष में अग्रसर भारत - संध्या वेणुगोपाल शर्मा 20

4.2 गोबरधन से किसानों को आर्थिक लाभ - जितेन्द्र श्रीवास्तव 28

4.3 पोषण भी, पढ़ाई भी - डॉ. रीता पटनायक 32

4.4 विश्व में संस्कृत का बढ़ता प्रभाव - प्रो. श्रीनिवास वरखेड़ी 41

4.5 बारेकुरी, तिनसुकिया के हूलॉक गिबंस - स्वप्निल पॉल 50

05 प्रतिक्रियाएँ 55

प्रधानमंत्री का सन्देश

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार

'मन की बात' में एक बार फिर मेरे सभी परिवारजनों का स्वागत है। आज एक बार फिर बात होगी– देश की उपलब्धियों की, देश के लोगों के सामूहिक प्रयासों की। 21वीं सदी के भारत में, कितना ही कुछ ऐसा हो रहा है, जो विकसित भारत की नींव मजबूत कर रहा है। **जैसे, इस 23 अगस्त को ही हम सब देशवासियों ने पहला National Space Day मनाया।** मुझे विश्वास है कि आप सबने इस दिन को celebrate किया होगा, एक बार फिर चंद्रयान-3 की सफलता का जश्न मनाया होगा। **पिछले वर्ष इसी दिन चंद्रयान-3 ने चाँद के दक्षिणी हिस्से में शिव-शक्ति Point पर सफलतापूर्वक landing की थी। भारत इस गौरवपूर्ण उपलब्धि को हासिल करने वाला दुनिया का पहला देश बना।**

साथियो, देश के युवाओं को Space Sector Reforms से भी काफी फायदा हुआ है, इसलिए मैंने सोचा कि क्यों न आज, 'मन की बात' में Space Sector से जुड़े अपने कुछ युवा साथियों से बात की जाए। मेरे साथ बात करने के लिए Spacetech Start-Up GalaxEye की टीम जुड़ रही है। इस Start-Up को IIT-Madras के alumni ने शुरू किया था। ये सारे नौजवान आज हमारे साथ Phone Line पर मौजूद हैं– सुयश, डेनिल, रक्षित, किशन और प्रणित। आइए, इन युवाओं के अनुभवों को जानते हैं।

प्रधानमंत्री जी : Hello !

सभी युवा : Hello !

प्रधानमंत्री जी : नमस्ते जी !

सभी युवा (एक साथ) : नमस्कार सर!

प्रधानमंत्री जी : अच्छा साथियो, मुझे ये देखकर खुशी होती है कि IIT-Madras के दौरान हुई आपकी दोस्ती आज भी मजबूती से कायम है। यही वजह है कि आपने मिलकर GalaxEye शुरू करने का फैसला किया। मैं आज जरा उसके विषय में भी जानना चाहता हूँ। इस बारे में बताइए। इसके साथ ही ये भी बताएँ कि आपकी Technology से देश को कितना लाभ होने वाला है।

सुयश : जी मेरा नाम सुयश है। हम लोग साथ में जैसा आपने बोला, सब लोग साथ में IIT-Madras में मिले। वहीं पर हम लोग सब पढ़ाई कर रहे थे, अलग-अलग years में थे। अपनी Engineering की और उसी वक्त हम लोगों ने सोचा कि एक Hyperloop नाम का एक project है, जो हम लोग चाहते थे, साथ में करेंगे। उसी दौरान हमने एक team की शुरुआत की। उसका नाम

23 अगस्त, चंद्रयान 3 की ऐतिहासिक चंद्रमा लैंडिंग की स्मृति को संजोते हुए

था 'आविष्कार हाइपरलूप' (Avishkar Hyperloop) जिसको लेकर हम लोग अमेरिका (America) भी गए। उस साल हम एशिया की इकलौती team थी, जो वहाँ गई और हमारे देश का जो झंडा है, उसको हमने फहराया। और हम top 20 teams में से थे जो out of around 1500 (Fifteen hundred) teams around the world।

प्रधानमंत्री जी : चलिए! आगे सुनने से पहले इसके लिए तो बधाई दे दूँ।

सुयश : बहुत-बहुत धन्यवाद आपका। उसी उपलब्धि के दौरान हम लोगों की दोस्ती काफी गहरी हुई और इस तरीके के कठिन projects और tough projects करने का confidence भी आया और उसी दौरान SpaceX को देख के और Space में जो आपने जो Open up किया एक privatisation को जो 2020 में एक landmark decision भी आया, उसको लेकर हम लोग काफी excited थे और मैं रक्षित को invite करना चाहूँगा बोलने के लिए कि हम क्या बना रहे हैं और उसका फायदा क्या है ?

रक्षित : जी, तो मेरा नाम रक्षित है। और इस technology से हमको कैसे लाभ होगा, मैं इसका उत्तर दूँगा।

प्रधानमंत्री जी : रक्षित आप उत्तराखंड में कहाँ से हैं ?

रक्षित : सर मैं अल्मोड़ा से हूँ।

प्रधानमंत्री जी : तो बाल मिठाई वाले हैं आप ?

रक्षित : जी सर। जी सर। बाल मिठाई हमारी favourite है।

प्रधानमंत्री जी : वो हमारा जो लक्ष्य सेन है न, वो मेरे लिए regularly बाल मिठाई खिलाता रहता है मुझे। हाँ रक्षित बताइए।

रक्षित : तो हमारी जो ये technology है, ये अंतरिक्ष से बादलों के आर-पार देख सकती है और ये रात्रि में भी देख सकती है, तो हम इससे देश के किसी भी कोने के ऊपर रोज एक साफ तस्वीर खींच सकते हैं **और ये जो data हमें आएगा, इसका उपयोग हम दो क्षेत्रों में विकास करने के लिए करेंगे। पहला है, भारत को अत्यंत सुरक्षित बनाना। हमारे जो borders हैं और हमारे जो oceans हैं, seas हैं, उसके ऊपर रोज हम monitor करेंगे और enemy की activities को monitor करेंगे और हमारी Armed Forces को intelligence provide करेंगे और दूसरा है भारत के किसानों को सशक्त बनाना, तो हमने already एक product बनाया है भारत के झींगा किसानों के लिए, जो अंतरिक्ष से उनके ponds के पानी की quality measure कर सकता है 1/10th of the current cost में और हम चाहते हैं आगे जाते हुए हम दुनिया के लिए best quality satellite images generate करें और जो global issues हैं, Global Warming जैसे, इससे लड़ने के लिए हम दुनिया को best quality satellite data provide करें।**

प्रधानमंत्री जी : इसका मतलब हुआ कि आपकी टोली जय जवान भी करेगी, जय किसान भी करेगी।

रक्षित : जी सर, बिल्कुल।

प्रधानमंत्री जी : साथियो, आप इतना अच्छा काम कर रहे हैं, मैं ये भी जानना चाहता हूँ कि आपकी इस technology का precision कितना है ?

रक्षित : सर हम less than 50 centimeter के resolution तक जा पाएँगे और हम एक बार में approximately more than 300 square kilometer area को image कर पाएँगे।

प्रधानमंत्री जी : चलिए, मैं समझता हूँ कि ये बात जब देशवासी सुनेंगे तो उनको बड़ा गर्व होगा, लेकिन मैं एक और सवाल पूछना चाहूँगा।

रक्षित : जी सर।

प्रधानमंत्री जी : Space eco-system बहुत ही vibrant हो रहा है। अब आपकी team इसमें क्या बदलाव देख रहे हैं ?

किशन : मेरा नाम किशन है, हमने ये GalaxEye शुरू होने के बाद से ही

आकाश की कोई सीमा नहीं
भारत की अंतरिक्ष यात्रा को आकार दे रहे स्टार्टअप

हमने IN-SPACe आते हुए देखा है और काफी सारे policies आते हुए देखे हैं ये, जैसे कि 'geo-Spatial Data Policy' and 'India Space Policy' और हमने पिछले 3 साल में काफी बदलाव आते हुए देखा है और काफी processes और काफी infrastructure और काफी facilities, ISRO के ये available और काफी अच्छे तरीके से हुए हैं, जैसे कि हम ISRO में जाके testing कर सकते हैं हमारे hardware का, ये काफी आसान तरीके से अभी हो सकता है। 3 साल पहले वो processes उतने नहीं थे और ये काफी helpful रहा है हमारे लिए और काफी और Start-Ups के लिए भी **और recent FDI policies की वजह से और ये facilities availability की वजह से और Start-Ups को आने के लिए काफी incentive है और ऐसे Start-Ups आ के काफी easily और काफी अच्छे से development कर सकते हैं, ऐसी field में, जिसमें usually development करना बहुत costly और time consuming रहता है। But current policies और IN-SPACe के आने के बाद काफी चीजें आसान हुई हैं Start-Ups के लिए।** मेरे मित्र डेनिल चावड़ा भी इस पर कुछ बोलना चाहेंगे।

प्रधानमंत्री जी : डेनिल बताइए...

डेनिल : सर, हमने एक और चीज observe किया है, **हमने देखा है कि जो engineering के छात्र हैं, उनकी सोच में बदलाव देखा है। वो पहले बाहर जाकर higher studies pursue करना चाहते थे और वहाँ काम करना चाहते थे और space domain में, but अब क्योंकि India में एक space eco system बहुत अच्छे तरीके से आ रहा है, तो इस कारण वो लोग India वापस आ के इस eco system के part बनना चाहते हैं, तो ये काफी अच्छा feedback हमें मिला है और हमारी खुद की कम्पनी में कुछ लोग वापस आ के काम कर रहे हैं इसी वजह से।**

प्रधानमंत्री जी : मुझे लगता है कि आपने दोनों जो पहलू बताए, किशन ने और डेनिल दोनों ने, मैं जरूर मानता हूँ कि बहुत से लोगों का इस तरफ ध्यान नहीं गया होगा कि एक क्षेत्र में जब reform होता है, तो reform का कितने multiple effects होते हैं, कितने लोगों का लाभ होता है और जो आपके वर्णन से, क्योंकि आप उस field में हैं तो आपको ध्यान में जरूर आता है और

आप ने observe भी किया है कि देश के नौजवान अब इस field में यहीं पर अपना भविष्य आजमाना चाहते हैं, अपने talent का उपयोग करना चाहते हैं। बहुत अच्छा observation है आपका। एक और सवाल मैं पूछना चाहूँगा। आप उन युवाओं को क्या सन्देश देना चाहेंगे, जो Start-Ups और Space Sector में सफलता हासिल करना चाहते हैं।

प्रणित : मैं प्रणित बात कर रहा हूँ और मैं सवाल का जवाब दूँगा।

प्रधानमंत्री जी : हाँ प्रणित, बताइए।

प्रणित : सर, मैं अपने कुछ सालों के experience से दो चीजें बोलना चाहूँगा। सबसे पहली कि अगर अपने को Start-Up करना हो तो यही मौका है, क्योंकि पूरी दुनिया में India आज वो देश है, जो world का सबसे fastest growing economy है और इसका मतलब ये हुआ कि अपने पास opportunity बहुत ज्यादा है, जैसे मैं 24 साल की उम्र में ये सोच के proud feel करता हूँ कि अगले साल हमारी एक satellite launch होगी, जिसके basis पर अपनी Government कुछ major decisions लेगी और उसमें हमारा छोटा सा एक contribution है। ऐसी कुछ national impact की projects से काम करने को मिले, ये ऐसी industry और ये ऐसा time है, कि ये Space Industry आज, अभी तक start हो रही है, तो मैं अपने युवा दोस्तों को यही बोलना चाहूँगा कि ये opportunity न सिर्फ impact की, but also उनके खुद के financial growth की और एक global problem solve करने की है, तो हम आपस में यही बात करते हैं कि बचपन में हम ये बोलते थे कि बड़े हो कर actor बनेंगे, sportsmen बनेंगे, तो यहाँ ऐसे कुछ चीजें होती थीं, but अगर आज हम ये सुनें कि कोई बड़ा होकर ये बोलता है कि मुझे बड़ा होकर entrepreneur बनना है, space industry में काम करना है। ये हमारे लिए बहुत proud moment है कि हम इस पूरे transformation में एक छोटा सा part play कर रहे हैं।

प्रधानमंत्री जी : साथियो, एक प्रकार से प्रणित, किशन, डेनिल, रक्षित, सुयश जितनी मजबूत आपकी दोस्ती है, उतना ही मजबूत आपका Start-Up भी है। तभी तो आप लोग इतना शानदार काम कर रहे हैं। मुझे कुछ साल पहले IIT-Madras जाने का अवसर मिला था और मैंने उस संस्थान के excellence को खुद अनुभव किया है और वैसे भी IIT के सम्बंध में पूरे विश्व में एक सम्मान का भाव है और वहाँ से निकलने वाले हमारे लोग जब भारत के लिए काम करते हैं तो जरूर कुछ न कुछ अच्छा contribute करते हैं। आप सभी को और Space Sector में काम करने वाले दूसरे सभी Start-Ups को मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएँ हैं और आप पाँचों साथियों से बात करके मुझे बहुत अच्छा लगा। चलिए, बहुत-बहुत धन्यवाद दोस्तो।

सुयश : Thank you so much!

मेरे प्यारे देशवासियो, इस साल मैंने लाल किले से बिना Political background वाले एक लाख युवाओं को Political system से जोड़ने का आह्वान किया है। मेरी इस बात पर जबरदस्त प्रतिक्रिया हुई है। इससे पता चलता है कि कितनी बड़ी संख्या में हमारे युवा राजनीति में आने को तैयार बैठे हैं। बस उन्हें सही मौके और सही मार्गदर्शन

बदलाव की शुरुआत: युवाओं से राजनीति में शामिल होने का आह्वान

की तलाश है। इस विषय पर मुझे देश-भर के युवाओं के पत्र भी मिले हैं। social media पर भी जबरदस्त response मिल रहा है। लोगों ने मुझे कई तरह के सुझाव भी भेजे हैं। कुछ युवाओं ने पत्र में लिखा है कि ये उनके लिए वाकई अकल्पनीय है। दादा या माता-पिता की कोई राजनीतिक विरासत नहीं होने की वजह से, वो राजनीति में चाहकर भी नहीं आ पाते थे। कुछ युवाओं ने लिखा कि उनके पास ज़मीनी-स्तर पर काम करने का अच्छा अनुभव है, इसलिए वे लोगों की समस्याओं को सुलझाने में मददगार बन सकते हैं। कुछ युवाओं ने ये भी लिखा कि परिवारवादी राजनीति, नई प्रतिभाओं का दमन कर देती है। कुछ युवाओं ने कहा कि इस तरह के प्रयासों से हमारे लोकतंत्र को और मजबूती मिलेगी। मैं इस विषय पर सुझाव भेजने के लिए हर किसी का धन्यवाद करता हूँ। मुझे उम्मीद है कि अब हमारे सामूहिक प्रयास से ऐसे युवा, जिनका कोई Political background नहीं है, वे भी राजनीति में आगे आ सकेंगे, उनका अनुभव और उनका जोश, देश के काम आएगा।

साथियो, स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भी समाज के हर क्षेत्र से ऐसे अनेकों लोग सामने आए थे, जिनकी कोई राजनीतिक पृष्ठभूमि नहीं थी। उन्होंने खुद को भारत की आजादी के लिए झोंक दिया था। आज हमें विकसित भारत का लक्ष्य पाने के लिए एक बार फिर उसी spirit की जरूरत है। मैं अपने सभी युवा साथियों को कहूँगा इस अभियान से जरूर जुड़ें। आपका ये कदम अपने और देश के भविष्य को बदलने वाला होगा।

मेरे प्यारे देशवासियो, 'हर घर तिरंगा और पूरा देश तिरंगा' इस बार ये अभियान अपनी पूरी ऊँचाई पर रहा। देश के कोने-कोने से इस अभियान से जुड़ी अद्भुत तस्वीरें सामने आई हैं। हमने घरों पर तिरंगा लहराते देखा– School, College, University में तिरंगा देखा। लोगों ने अपनी दुकानों, दफ्तरों में तिरंगा लगाया, लोगों ने अपने

Desktop, Mobile और गाड़ियों में भी तिरंगा लगाया। जब लोग एक साथ जुड़कर अपनी भावना प्रकट करते हैं, तो इसी तरह हर अभियान को चार चाँद लग जाते हैं। अभी आप अपने TV Screen पर जो तस्वीरें देख रहे हैं, ये जम्मू-कश्मीर के रियासी की हैं। **यहाँ 750 मीटर लम्बे झंडे के साथ तिरंगा रैली निकाली गई और ये रैली दुनिया के सबसे ऊँचे चिनाब रेलवे ब्रिज पर निकाली गई।** जिसने भी इन तस्वीरों को देखा, उसका मन खुशी से झूम उठा। श्रीनगर के डल लेक में भी तिरंगा यात्रा की मनमोहक तस्वीरें हम सबने देखी। अरुणाचल प्रदेश के ईस्ट कामेंग जिले में भी 600 फीट लम्बे तिरंगे के साथ यात्रा निकाली गई। देश के अन्य राज्यों में भी इसी तरह, हर उम्र के लोग, ऐसी तिरंगा यात्राओं में शामिल हुए। स्वतंत्रता दिवस अब एक सामाजिक पर्व भी बनता जा रहा है, ये आपने भी अनुभव किया होगा। लोग अपने घरों को तिरंगा माला से सजाते हैं। 'स्वयं सहायता समूह' से जुड़ी महिलाएँ लाखों झंडे तैयार करती हैं। E-Commerce platform पर तिरंगे में रंगे सामानों की बिक्री बढ़ जाती है। **स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर देश के हर कोने, जल-थल-नभ– हर जगह हमारे झंडे के तीन रंग दिखाई दिए। हर घर तिरंगा website पर पाँच करोड़ से ज्यादा Selfie भी पोस्ट की गई। इस अभियान ने पूरे देश को एक सूत्र में बाँध दिया है और यही तो 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' है।**

मेरे प्यारे देशवासियो, इंसानों और जानवरों के प्यार पर आपने कितनी सारी फिल्में देखी होंगी, लेकिन एक Real story इन दिनों असम में बन रही है। **असम में तिनसुकिया जिले के छोटे से गाँव बारेकुरी में मोरान समुदाय के लोग रहते हैं और इसी गाँव में रहते हैं 'हूलॉक गिबंस', जिन्हें यहाँ 'होलो बंदर' कहा जाता है। हूलॉक गिबंस ने इस गाँव में ही अपना बसेरा बना लिया है। आपको जानकर आश्चर्य होगा– इस गाँव के लोगों का हूलॉक गिबंस के साथ बहुत गहरा सम्बंध है।** गाँव के लोग आज भी अपने पारम्परिक मूल्यों का पालन करते हैं। इसलिए उन्होंने वो सारे काम किए, जिससे गिबंस के साथ उनके रिश्ते और मजबूत हों। उन्हें जब यह एहसास

हुआ कि गिबंस को केले बहुत पसंद हैं, तो उन्होंने केले की खेती भी शुरू कर दी। इसके अलावा उन्होंने तय किया कि गिबंस के जन्म और मृत्यु से जुड़े रीति-रिवाजों को वैसे ही पूरा करेंगे, जैसा वे अपने लोगों के लिए करते हैं। उन्होंने गिबंस को नाम भी दिए हैं। हाल ही में गिबंस को पास से गुजर रहे बिजली के तारों के कारण मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा था, ऐसे में इस गाँव के लोगों ने सरकार के सामने इस मामले को रखा और जल्द ही इसका समाधान भी निकाल लिया गया। मुझे बताया गया है कि अब ये गिबंस तस्वीरों के लिए पोज़ भी देते हैं।

साथियो, पशुओं के प्रति प्रेम में हमारे अरुणाचल प्रदेश के युवा साथी भी किसी से पीछे नहीं हैं। **अरुणाचल में हमारे कुछ युवा-साथियों ने 3-D printing technology का उपयोग करना शुरू किया है– जानते हैं क्यों?**

क्योंकि वो वन्य जीवों को सींगों और दाँतों के लिए शिकार होने से बचाना चाहते हैं। नाबम बापू और लिखा नाना के नेतृत्व में ये टीम जानवरों के अलग-अलग हिस्सों की 3-D printing करती है। जानवरों के सींग हों, दाँत हों, ये सब, 3-D printing से तैयार होते हैं। इससे फिर ड्रेस और टोपी जैसी चीजें बनाई जाती हैं। ये गजब का Alternative है, जिसमें Bio-degradable material का उपयोग होता है। ऐसे अद्भुत प्रयासों की जितनी भी सराहना की जाए, कम है। मैं तो कहूँगा, अधिक से अधिक Start-ups इस क्षेत्र में सामने आएँ ताकि हमारे पशुओं की रक्षा हो सके और परम्परा भी चलती रहे।

मेरे प्यारे देशवासियो, मध्य-प्रदेश के झाबुआ में, कुछ ऐसा शानदार हो रहा है, जिसे आपको जरूर जानना चाहिए। वहाँ पर हमारे सफाई-कर्मी भाई-बहनों ने कमाल कर दिया है। **इन भाई-बहनों ने हमें 'Waste to Wealth' का सन्देश सच्चाई में बदलकर दिखाया है। इस टीम ने झाबुआ के एक पार्क में कचरे से अद्भुत Art work तैयार किया है। अपने इस काम के लिए उन्होंने आस-पास के क्षेत्रों से plastic waste- इस्तेमाल की हुई bottles, tyres और pipes इकट्ठा किए। इन Art works में हेलीकॉप्टर, कार और तोपें भी शामिल हैं। खूबसूरत हैंगिंग flower pots भी बनाए गए हैं। यहाँ इस्तेमाल किए गए टायरों का उपयोग आरामदायक bench बनाने के लिए किया गया है। सफाई कामगारों की इस टीम ने Reduce, Reuse और Recycle का मंत्र अपनाया है।** उनके प्रयासों से पार्क बहुत ही सुंदर दिखने लगा

है। इसे देखने के लिए स्थानीय लोगों के साथ ही आस-पास के जिलों में रहने वाले भी यहाँ पहुँच रहे हैं।

साथियो, मुझे खुशी है कि आज हमारे देश में कई सारी Start-Up टीम भी पर्यावरण को बढ़ावा देने के लिए ऐसे प्रयासों से जुड़ रही हैं। e-Conscious नाम की एक टीम है, जो plastic waste का उपयोग eco-friendly products बनाने में कर रही है। इसका idea उन्हें हमारे पर्यटन स्थलों, विशेषकर पहाड़ी इलाकों में फैले कचरे को देखकर के आया। ऐसे ही लोगों की एक और टीम ने Ecokaari नाम से start-up शुरू किया है। ये plastic waste से अलग-अलग खूबसूरत चीजें बनाते हैं।

साथियो, Toy Recycling भी ऐसा ही एक और क्षेत्र है, जिसमें हम मिलकर काम कर सकते हैं। आप भी जानते हैं कि कई बच्चे कितनी जल्दी खिलौनों से bore हो जाते हैं, वहीं ऐसे बच्चे भी हैं, जो उन्हीं खिलौनों का सपना सँजोए होते हैं। ऐसे खिलौने, जिससे अब आपके बच्चे नहीं खेलते, उन्हें आप ऐसी जगहों पर दे सकते हैं, जहाँ उनका उपयोग होता रहे। ये भी पर्यावरण की रक्षा का एक अच्छा रास्ता है। हम सब मिलकर प्रयास करेंगे, तभी पर्यावरण भी मजबूत होगा और देश भी आगे बढ़ेगा।

मेरे प्यारे देशवासियो, कुछ ही दिन पहले हमने 19 अगस्त को रक्षाबंधन का पर्व मनाया। **उसी दिन पूरी दुनिया में 'विश्व संस्कृत दिवस' भी मनाया गया। आज भी देश-विदेश में संस्कृत के प्रति लोगों का विशेष लगाव दिखता है। दुनिया के कई देशों में संस्कृत भाषा को लेकर तरह-तरह की research और प्रयोग हो रहे हैं।** आगे की बात करने से पहले मैं आपके लिए एक छोटी सी audio clip play कर रहा हूँ:

साथियो, इस audio का सम्बंध यूरोप के एक देश लिथुएनिया से है। वहाँ एक प्रोफेसर Vytis Vidūnas ने एक अनूठा प्रयास किया है और इसे नाम दिया है – 'संस्कृत On the Rivers'. कुछ लोगों का एक group वहाँ नेरिस River के किनारे जमा हुआ और वहाँ उन्होंने

सभी के लिए पोषण

स्वस्थ कल का निर्माण

वेदों और गीता का पाठ किया। यहाँ ऐसे प्रयास पिछले कुछ वर्षों से निरंतर जारी हैं। आप भी संस्कृत को आगे बढ़ाने वाले ऐसे प्रयासों को सामने लाते रहिए।

मेरे प्यारे देशवासियो, हम सबके जीवन में fitness का बहुत महत्त्व है। फिट रहने के लिए हमें अपने खानपान-रहन-सहन सब पर ध्यान देना होता है। लोगों को fitness के प्रति जागरूक करने के लिए ही 'फिट इंडिया अभियान' की शुरुआत की गई। स्वस्थ रहने के लिए आज हर आयु, हर वर्ग के लोग योग को अपना रहे हैं। लोग अपनी थाली में अब superfood millets यानी श्रीअन्न को जगह देने लगे हैं। इन सभी प्रयासों का उद्देश्य यही है कि हर परिवार स्वस्थ हो।

साथियो, हमारा परिवार, हमारा समाज और हमारा देश और इन सबका भविष्य, हमारे बच्चों की सेहत पर निर्भर है और बच्चों की अच्छी सेहत के लिए जरूरी है कि उन्हें सही पोषण मिलता रहे। बच्चों का nutrition देश की प्राथमिकता है। वैसे तो उनके पोषण पर पूरे साल हमारा ध्यान रहता है, लेकिन एक महीना, देश इस पर विशेष focus करता है। इसके लिए हर साल 1 सितम्बर से 30 सितम्बर के बीच पोषण माह मनाया जाता है। पोषण को लेकर लोगों को जागरूक बनाने के लिए पोषण मेला, एनीमिया (anemia) शिविर, नवजात शिशुओं के घर की visit, seminar, webinar जैसे कई तरीके अपनाए जाते हैं। कितनी ही जगहों पर आँगनवाड़ी के तहत mother and child committee की स्थापना भी की गई है। **ये कमेटी कुपोषित बच्चों, गर्भवती महिलाओं और नवजात शिशुओं की माताओं को track करती है, उन्हें लगातार monitor किया जाता है और उनके पोषण की व्यवस्था की जाती है। पिछले वर्ष पोषण अभियान को नई शिक्षा नीति से भी जोड़ा गया है। 'पोषण भी पढ़ाई भी' इस अभियान के द्वारा बच्चों के संतुलित विकास पर focus किया गया है।** आपको भी अपने क्षेत्र में पोषण के प्रति जागरूकता वाले अभियान से जरूर जुड़ना चाहिए। आपके एक छोटे से प्रयास से कुपोषण के खिलाफ इस लड़ाई में बहुत मदद मिलेगी।

मेरे प्यारे देशवासियो, इस बार की 'मन की बात' में इतना ही। 'मन की बात' में आपसे बात करके मुझे हमेशा बहुत अच्छा लगता है। ऐसा लगता है जैसे

मैं अपने परिवारजनों के साथ बैठ करके हल्के-फुल्के वातावरण में अपने मन की बातें साझा कर रहा हूँ। आपके मन से जुड़ रहा हूँ। आपके feedback, आपके सुझाव, मेरे लिए बहुत ही मूल्यवान हैं। कुछ ही दिनों में अनेक त्योहार आने वाले हैं। मैं, आप सभी को उनकी ढेर सारी शुभकामनाएँ देता हूँ। जन्माष्टमी का त्योहार भी है। अगले महीने शुरुआत में ही गणेश चतुर्थी का भी पर्व है। ओणम का त्योहार भी करीब है। मीलाद-उन-नबी की भी बधाई देता हूँ।

साथियो, इस महीने 29 तारीख को 'तेलुगु भाषा दिवस' भी है। यह सचमुच बहुत ही अद्भुत भाषा है। मैं दुनिया-भर के सभी तेलुगु भाषियों को 'तेलुगु भाषा दिवस' की शुभकामनाएँ देता हूँ।

प्रपंच व्याप्तंगा उन्न,
तेलुगु वारिकि,
तेलुगु भाषा दिनोत्सव शुभाकांक्षलु।

साथियो, मैं आप सभी से बारिश के इस मौसम में सावधानी बरतने के साथ ही 'Catch the Rain Movement' का हिस्सा बनने का भी आग्रह दोहराऊँगा। मैं आप सभी को 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान की याद दिलाना चाहूँगा। ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाएँ और दूसरों से भी इसका आग्रह करें। आने वाले दिनों में पेरिस में Paralympics शुरू हो रहे हैं। हमारे दिव्यांग भाई-बहन वहाँ पहुँचे हैं। 140 करोड़ भारतीय अपने athlete और खिलाड़ियों को cheer कर रहे हैं। आप भी #cheer4bharat के साथ अपने खिलाड़ियों को प्रोत्साहन दीजिए। अगले महीने हम एक बार फिर जुड़ेंगे और बहुत सारे विषयों पर चर्चा करेंगे। तब तक के लिए मुझे विदा दीजिए। बहुत-बहुत धन्यवाद। नमस्कार।

'मन की बात' सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस

भारत की अंतरिक्ष यात्रा का सम्मान

"21वीं सदी के भारत में बहुत कुछ ऐसा हो रहा है, जो विकसित भारत की नींव को मजबूत कर रहा है। उदाहरण के लिए 23 अगस्त को देशवासियों ने पहला राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस मनाया। मुझे विश्वास है कि आप सभी ने इस दिन को मनाया होगा; एक बार फिर चंद्रयान-3 की सफलता का जश्न मनाया होगा। पिछले वर्ष इसी दिन चंद्रयान-3 ने चंद्रमा के दक्षिणी भाग में शिव-शक्ति बिंदु पर सफलतापूर्वक लैंडिंग की थी। भारत इस गौरवपूर्ण उपलब्धि को हासिल करने वाला दुनिया का पहला देश बना। साथियो, देश के युवाओं को अंतरिक्ष क्षेत्र में सुधारों से भी काफी फायदा हुआ है।"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' सम्बोधन में)

"भारत का अंतरिक्ष क्षेत्र वर्तमान में एक परिवर्तनकारी दौर से गुजर रहा है, जो रणनीतिक दृष्टि और तकनीकी प्रगति के संयोजन से प्रेरित है। पिछले पाँच वर्षों में अंतरिक्ष क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। ऐसा कई पहल के कारण हुआ है, जिनमें सुधारों का कार्यान्वयन और नई शिक्षा नीति की शुरुआत शामिल हैं।"

-संध्या वेणुगोपाल शर्मा
अतिरिक्त सचिव, अंतरिक्ष विभाग,
IN-SPACe

एक ऐसा देश, जिसने मामूली शुरुआत से कदम बढ़ाया था, आज वैश्विक अंतरिक्ष समुदाय के प्रमुख खिलाड़ियों में से एक बन गया है। अतीत, वर्तमान और भविष्य के प्रयासों का सम्मान करने के लिए 23 अगस्त, 2024 को राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस मनाया गया था।

भारत मंडपम में आयोजित इस कार्यक्रम का विषय था, 'चाँद को छूते हुए जीवन को छूना'। यह कार्यक्रम समाज की भलाई के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का उपयोग करने की भारत की प्रतिबद्धता पर केंद्रित था।

भारत में अंतरिक्ष से सम्बंधित 1000 संस्थानों में अंतरिक्ष सप्ताह समारोहों के हिस्से के रूप में लोगो डिजाइन प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, ड्राइंग तथा पेंटिंग– रंग, अंतरिक्ष पोशाक कार्यक्रम, अंतरिक्ष फैशन शो प्रतियोगिता जैसे कार्यक्रम आयोजित किए गए।

भारत अंतरिक्ष सप्ताह समारोहों के अंतर्गत अंतरिक्ष विज्ञान जागरूकता कार्यक्रम के तहत एक स्मार्टफोन एस्ट्रोफोटोग्राफी कार्यशाला भी आयोजित की गई।

क्या आप जानते हैं?

भारत द्वारा अब तक लॉन्च किए गए 424 विदेशी उपग्रहों में से 389 प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार के पिछले नौ वर्षों में लॉन्च किए गए थे।

भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम उल्लेखनीय उपलब्धियों से भरा हुआ है। दूरदराज के क्षेत्रों को जोड़ने वाले संचार उपग्रहों और आपदा प्रबंधन के लिए पृथ्वी अवलोकन उपग्रहों से लेकर राष्ट्रीय सुरक्षा में उपयोग होने वाले नवाचारों तक, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी लगातार भारत की विकास कार्यनीति का हिस्सा बन रही है।

भारत सरकार ने माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में अंतरिक्ष क्षेत्र में अभूतपूर्व सुधार शुरू किए हैं। इन सुधारों का उद्देश्य हमारे देश में अंतरिक्ष शिक्षा, अनुसंधान तथा विकास को आगे बढ़ाना है।

इसरो ने भारत की अंतरिक्ष यात्रा में न केवल उपग्रहों और अंतरिक्ष मिशनों को लॉन्च करने में बल्कि आर्थिक नवाचारों को आगे बढ़ाने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष संवर्द्धन और प्राधिकरण केंद्र की स्थापना, अंतरिक्ष-आधारित पृथ्वी अवलोकन उपग्रह प्रणाली के निर्माण और प्रबंधन के लिए भारतीय कम्पनियों को आमंत्रित करके निजी भागीदारी को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक कदम है। यह कदम अमरीकी मॉडल से प्रेरणा लेते हुए

क्या आप जानते हैं?

भविष्य-केंद्रित प्रधानमंत्री मोदी की अगुवाई में भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र ने इन 9 वर्षों के दौरान 2060 करोड़ रुपये (223 मिलियन यूरो) कमाए, जबकि इस क्षेत्र की अब तक की कमाई 2367.8 करोड़ रुपये (256 मिलियन यूरो) है।

उठाया गया है। इसका उद्देश्य उपग्रह डिज़ाइन, प्रक्षेपण और डेटा प्रसंस्करण के लिए संधारणीय और लागत प्रभावी पारिस्थितिकी तंत्र बनाना है।

100 प्रतिशत तक विदेशी निवेश की अनुमति देने वाली एफडीआई नीतियों का उदारीकरण इस क्षेत्र की तकनीकी प्रगति को और बढ़ाएगा तथा नवाचार को बढ़ावा देगा।

भारतीय अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था का वर्तमान मूल्य लगभग 8 बिलियन डॉलर है, जो वैश्विक अंतरिक्ष बाजार का लगभग 2 प्रतिशत है। सुधारों के साथ, भारत का लक्ष्य वैश्विक अंतरिक्ष बाजार में एक बड़ा हिस्सा हासिल करना है, जिससे कई नौकरियों का सृजन होने और सम्बंधित क्षेत्रों में आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलने की आशा है।

सुधारों में नवाचार की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। इसरो का ध्यान परिचालन प्रणालियों से उन्नत अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों पर केंद्रित करने से निजी क्षेत्र नए युग के समाधानों के साथ भाग ले सकेगा। वह परीक्षण के लिए इसरो

की सुविधाओं का उपयोग नाममात्र या बिना किसी लागत के कर सकेगा।

इस क्षेत्र में उद्यमियों के लिए अनुकूल वातावरण बनाने के अलावा, इसरो युवा प्रतिभाओं को निखारने और उन्हें अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु इंटर्नशिप, कार्यशालाएँ और शैक्षिक कार्यक्रम प्रदान करता है।

भारत की अंतरिक्ष यात्रा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। अक्तूबर 2023 में, इसरो ने भारत के मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम के लिए अपना पहला मानव रहित उड़ान परीक्षण पूरा किया। अंतरिक्ष यात्रियों को अंतरिक्ष में भेजने की दिशा में यह एक महत्त्वपूर्ण कदम है। इसरो लागत कम करने और प्रक्षेपणों की संख्या बढ़ाने के लिए पुनर्प्रयोज्य प्रक्षेपण यान प्रौद्योगिकी भी विकसित कर रहा है।

भविष्य की महत्त्वाकांक्षी योजनाओं के लिए सफलता की कोई सीमा नहीं है, यह तो बस शुरुआत है। इन योजनाओं में मानवयुक्त अंतरिक्ष मिशन, चंद्र अन्वेषण और अंतरग्रहीय जाँच शामिल हैं।

राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस, अन्वेषण की इस भावना और ज्ञान की निरंतर खोज का उत्सव है, जो भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम को परिभाषित करता है।

देश अपनी अंतरिक्ष अन्वेषण यात्रा पर निकलने के लिए तैयार है, क्योंकि 'ये दिल माँगे मोर'।

विशालता की ओर भारत का पहला कदम

इसरो की स्थापना डॉ. विक्रम साराभाई ने की थी, जिन्हें अक्सर भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के जनक के रूप में जाना जाता है (1969)

आर्यभट्ट अंतरिक्ष में जाने वाला भारत का पहला उपग्रह था (1975)।

एसएलवी-13 पहला स्वदेशी उपग्रह प्रक्षेपण यान था (1980)।

चंद्रयान-1 (2008) भारत का पहला चंद्र मिशन था।

मंगलयान (2013) ने भारत को मंगल ग्रह की कक्षा में पहुँचने वाला पहला एशियाई राष्ट्र बनाया।

चंद्रयान 3 (2023) ने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर भारत की ऐतिहासिक लैंडिंग को चिह्नित किया।

आदित्य एल-1 मिशन भारत की पहली समर्पित सौर प्रयोगशाला (2023) है।

इसरो को 2024 में 'इंडियन ऑफ द ईयर अवार्ड' मिला।

गगनयान मिशन ने मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम के लिए भारत के पहले मानव रहित उड़ान परीक्षण का स्मरण कराया। मिशन के दिसम्बर, 2024 में लॉन्च होने की उम्मीद है।

युवा पीढ़ी में अंतरिक्ष विज्ञान के प्रति रुचि पैदा करने के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए।

“अंतरिक्ष पारिस्थितिकी तंत्र बहुत जीवंत होता जा रहा है। देश के युवा यहीं इस क्षेत्र में अपना भविष्य आज़माना चाहते हैं, अपने टैलेंट का इस्तेमाल करना चाहते हैं।”

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

अंतरिक्ष क्षेत्र में बढ़ती सम्भावनाएँ

सरकारी नीतियों और निरंतर प्रयासों से अंतरिक्ष के क्षेत्र में नवीन सम्भावनाओं की राहें खुली हैं। सीड फंडिंग और मेंटरशिप से प्रेरित स्टार्टअप अभूतपूर्व दर से कक्ष में लॉन्च हो रहे हैं।

ये नई तकनीकों के साथ नवाचार की परिधि से आगे बढ़ रहे हैं। अंतरिक्ष का भविष्य पहले से कहीं अधिक उज्ज्वल दिख रहा है और भारत इसमें सबसे आगे है। आइए पढ़ें कि उन्हें क्या कहना है!

pixxel

2019 में हमने फसल रोगों और गैस रिसाव जैसे अदृश्य मुद्दों का पता लगाने में सक्षम हाइपरस्पेक्ट्रल उपग्रह बनाने का लक्ष्य रखा। ये उच्च-रिज़ॉल्यूशन उपग्रह पृथ्वी पर एक अद्वितीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करेंगे। भारत के तीन प्रक्षेपित उपग्रहों में से यह पहला निजी वाणिज्यिक उपग्रह था। आने वाले महीनों में छह और उपग्रहों की योजना बनाई गई है, जिससे यह अपनी तरह का दुनिया का पहला और उच्चतम-रिज़ॉल्यूशन वाला उपग्रह समूह बन जाएगा।

-अवैस अहमद, सीईओ, पिक्सैल

26 महीनों में 8 मिशनों के साथ भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम तेजी से बढ़ रहा है। सरकारी समर्थन लागत दक्षता और बढ़ते बाजार के लिए महत्त्वपूर्ण रहा। इससे भारत वैश्विक प्रभुत्व के लिए तैयार है। स्टार्टअप इंडिया पहल नवाचार, फंडिंग, मेंटरशिप और नेटवर्किंग के लिए एक मंच प्रदान करती है। अब युवा स्टार्टअप के पास प्रौद्योगिकी के भविष्य को आकार देने का अवसर है।

-कृष्ण तेजा पेनामाकुरु, ध्रुवा स्पेस

भारत के अंतरिक्ष से जुड़े तकनीक क्षेत्र में तेजी से विस्तार हो रहा है। दिगंतारा अंतरिक्ष में दीर्घकालिक तकनीकी स्थिरता बनाए रखने के लिए समर्पित है। हम अंतरिक्ष में स्पेस अधिकरण की बढ़ती समस्या को कम करने के लिए एक नेविगेशन प्लेटफ़ॉर्म विकसित कर रहे हैं। हमारे प्रयासों के लिए प्रधानमंत्री मोदी द्वारा मान्यता प्राप्त होना एक बड़ा सम्मान है।

-राहुल रावत, सह-संस्थापक, दिगंतारा

सरकार की नई अंतरिक्ष नीति स्टार्टअप और निजी क्षेत्र के लिए बेहतरीन अवसर प्रदान करती है। इसरो के बुनियादी ढाँचे और प्रौद्योगिकी का अब व्यावसायीकरण किया जा सकता है। यह हमारे युवाओं के लिए नवप्रवर्तन करने और भारत के भविष्य में योगदान करने का एक मौका है। इसरो का ‘अंतरिक्ष जिज्ञासा’ मंच और कई अन्य पहलें अंतरिक्ष विज्ञान में रुचि रखने वाले युवाओं के लिए संसाधन प्रदान करती हैं।

-डॉ. हरीश चंद्र कर्नाटक, वैज्ञानिक, इसरो

अंतरिक्ष में अग्रसर भारत

संध्या वेणुगोपाल शर्मा
अतिरिक्त सचिव, अंतरिक्ष विभाग, IN-SPACe

माननीय प्रधानमंत्री द्वारा की गई घोषणा के अनुसार चंद्रयान-3 मिशन की सफलता के उपलक्ष्य में हर साल 23 अगस्त को 'राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस' के रूप में मनाया जाएगा। इस दिन चंद्रमा पर विक्रम लैंडर ने सुरक्षित और सॉफ्ट लैंडिंग की थी। लैंडिंग स्पॉट को 'शिव शक्ति' नाम दिया गया था। भारत ने अपना पहला राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस 23 अगस्त, 2024 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में भव्य रूप से मनाया। इसका विषय था 'चंद्रमा को छूते हुए जीवन को छूना : भारत की अंतरिक्ष गाथा'। अंतरिक्ष विभाग ने अखिल भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस समारोहों के अंतर्गत अन्य मंत्रालयों/ स्टार्ट-अप/ एनजीओ / शिक्षाविदों के साथ समन्वय स्थापित किया ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि ऐसे कार्यक्रम युवाओं में वैज्ञानिक सोच पैदा करने पर केंद्रित हों। इनमें भारत की विकास गाथा में अंतरिक्ष क्षेत्र की प्रासंगिकता और उपलब्धियों को उजागर किया गया। राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस समारोह के सिलसिले में सोशल मीडिया पर पोस्ट की गई सामग्री पर महत्त्वपूर्ण प्रतिक्रिया मिली। इसे 8.37 मिलियन बार देखा गया और 5,22,000 दर्शकों से लाइक प्राप्त हुए। समूचे देश को 7 जोन में विभाजित किया गया था और देश भर में क्षेत्रीय कार्यक्रम आयोजित किए गए। वैयक्तिगत गतिविधियों के माध्यम से 2,28,234 विद्यार्थी और सोशल मीडिया प्लेटफार्मों के माध्यम से 5,12,626 व्यक्ति इनसे जुड़े। अंतरिक्ष विभाग में स्पेस टेक्नोलॉजी इनक्यूबेशन सेंटर (एसटीआईसी), स्टार्ट-अप सीड फंडिंग प्रोग्राम और प्री-इनक्यूबेशन एंटरप्रेन्योरशिप (पीआईई) विकास कार्यक्रम आदि के साथ सक्षम और अनुकूल माहौल है, जो युवाओं में उद्यमशीलता की भावना पैदा करता है, और उन्हें अपने अभिनव विचारों को वास्तविकता में बदलने के लिए सशक्त बनाता है। यह अग्रणी कार्यक्रम महत्त्वाकांक्षी उद्यमियों को मार्गदर्शन, वित्तपोषण और नेटवर्किंग अवसरों तक पहुँच के लिए एक मंच प्रदान करता है, जो रचनात्मकता और वाणिज्य के बीच की खाई को पाटता है। यह बदलाव भारत के उभरते हुए अंतरिक्ष क्षेत्र को दर्शाता है, जो कार्यनीतिक सुधारों और प्रगति के कारण तेजी से विकसित हो रहा है। यह

वैज्ञानिक प्रतिभा से जुड़ी अगली पीढ़ी को आकर्षित कर रहा है। इस प्रवृत्ति में कई कारक योगदान करते हैं, जिनमें परिवर्तनकारी नीतिगत परिवर्तन, देश के भीतर बढ़ते अवसर और एक वैश्विक परिदृश्य शामिल है, जो परस्पर सम्बद्ध और गतिशील रहता है।

भारत का अंतरिक्ष क्षेत्र वर्तमान में एक परिवर्तनकारी दौर से गुजर रहा है, जो रणनीतिक दृष्टि और तकनीकी प्रगति के संयोजन से प्रेरित है। पिछले पाँच वर्षों में अंतरिक्ष क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। ऐसा कई पहल के कारण हुआ है, जिनमें सुधारों का कार्यान्वयन और नई शिक्षा नीति की शुरुआत शामिल हैं। ये सुधार निजी क्षेत्र की क्षमताओं को सरकारी पहलों के साथ एकीकृत करके अंतरिक्ष अन्वेषण और वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए भारत के दृष्टिकोण को आधुनिक बनाने के लिए किए गए हैं। अंतरिक्ष विभाग के प्रमुख घटकों के रूप में, भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष संवर्द्धन तथा प्राधिकरण केंद्र (INSPACe) और न्यू स्पेस इंडिया लिमिटेड (NSIL) की स्थापना एक प्रतिस्पर्धी तथा सहयोगी वातावरण बनाने की प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है। इसके साथ ही, दुनिया एक तकनीकी क्रांति से गुजर रही है, जिसकी विशेषता बिग डेटा एनालिटिक्स, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, क्वांटम टेक्नोलॉजी और उन्नत सामग्रियों में प्रगति है। यह वैश्विक तकनीकी विकास नए अवसर पैदा कर रहा है और अत्यधिक कुशल वैज्ञानिकों तथा इंजीनियरों की आवश्यकता को बढ़ा रहा है। परिणामस्वरूप, युवा पेशेवर स्वयं को तेज़ी से ऐसे परिदृश्य में पा रहे हैं, जहाँ देश के भीतर अवसरों को अत्यधिक महत्त्व दिया जाता है, जो अत्याधुनिक तकनीकों और पद्धतियों के लिए व्यापक परिप्रेक्ष्य और उन तक पहुँचने का अवसर प्रदान करता है।

परिवर्तनकारी नीतियाँ, सक्षम स्टार्ट-अप पारिस्थितिकी तंत्र और तकनीकी उन्नति के प्रति प्रतिबद्धता युवा प्रतिभाओं के लिए आकर्षक वातावरण बना रही है। ये वैज्ञानिक देश के तेज़ विकास और वैश्विक अंतरिक्ष बाजार में उसकी प्रमुखता को बढ़ाने में योगदान करते हैं। यह प्रवृत्ति अंतरिक्ष उद्योग में एक महत्त्वपूर्ण खिलाड़ी बनने की भारत की क्षमता को रेखांकित करती है, जो कुशल और प्रेरित पेशेवरों की नई पीढ़ी द्वारा संचालित है।

कचरे से कंचन

स्थायित्व का दिशानिर्देश

“मेरे प्यारे देशवासियो, मध्य-प्रदेश के झाबुआ में कुछ ऐसा शानदार हो रहा है, जिसे आपको ज़रूर जानना चाहिए। वहाँ पर हमारे सफाई-कर्मी भाई-बहनों ने कमाल कर दिया है। इन भाई-बहनों ने हमें ‘वेस्ट टू वेल्थ’ का सन्देश सच्चाई में बदलकर दिखाया है। इस टीम ने झाबुआ के एक पार्क में कचरे से अद्भुत आर्ट वर्क तैयार किया है। अपने इस काम के लिए उन्होंने आस-पास के क्षेत्रों से प्लास्टिक वेस्ट, इस्तेमाल की हुई बोतल, टायर और पाइप इकट्ठा किए। इन आर्ट वर्क में हेलीकॉप्टर, कार और तोपें भी शामिल हैं। खूबसूरत हैंगिंग फ्लावर पॉट भी बनाए गए हैं।”

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ सम्बोधन में)

“गोबरधन पहल भारत के जैविक अपशिष्ट संसाधनों की विशाल क्षमता को अनलॉक करने में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। गोबरधन पहल भारत के महत्त्वाकांक्षी ऊर्जा सम्बंधी लक्ष्यों को पूरा करने में योगदान देने के साथ ‘आत्मनिर्भर भारत’ और ‘मेक इन इंडिया’ के आदर्श वाक्य को बढ़ावा देते हुए दीर्घकालिक पर्यावरणीय और आर्थिक स्थायित्व को भी बढ़ावा देगी।”

-जितेन्द्र श्रीवास्तव
संयुक्त सचिव एवं मिशन निदेशक (गोबरधन)

स्वच्छ भारत अभियान और कचरे से कंचन मिशन द्वारा स्वच्छ और टिकाऊ भविष्य के लिए भारत के मिशन को आगे बढ़ाया जा रहा है, जो संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों के साथ तालमेल बिठाता है। यह पहल विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार के माध्यम से कचरे को मूल्यवान संसाधनों में बदलने पर केंद्रित है, जो एक सर्कुलर आर्थिक मॉडल में योगदान देता है।

इस परिवर्तन का एक उदाहरण मध्य प्रदेश के झाबुआ में देखा जा सकता है, जहाँ सफाई कर्मचारियों ने झाबुआ पार्क में प्लास्टिक, टायर और बोतलों जैसी बेकार सामग्री को रचनात्मक रूप से शानदार आर्टवर्क स्थापित करके बदल दिया है। उन्होंने ‘रिड्यूस, रियूज, रीसाइकिल’ सिद्धांत का पालन किया, कचरे का उपयोग करके हेलीकॉप्टर, बेंच, फूलों के गमले और अन्य संरचनाओं की प्रतिकृतियाँ बनाईं, जो लैंडफिल के कचरे को देखने में आकर्षक और समुदाय के लिए फायदेमंद बना सकती थीं। इस परियोजना ने न केवल पार्क को सुंदर बनाया, बल्कि यह एक स्थानीय आकर्षण भी बन गया। इसने आगंतुकों को आकर्षित किया और स्थायित्व, रचनात्मकता और सामुदायिक जुड़ाव को बढ़ावा दिया।

इस प्रयास के केंद्र में वेस्ट टू वेल्थ मिशन है, जो जीरो वेस्ट, जीरो-लैंडफिल भविष्य के अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए प्रौद्योगिकी-आधारित अभिनव समाधानों को मान्य और कार्यान्वित करके भारत की अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली में सुधार करना चाहता है। यह प्लेटफॉर्म अपशिष्ट प्रबंधन तकनीकों, नीतियों और निवेश के अवसरों के बारे में जानकारी प्रदान करता है, जिससे सभी सम्बंधित पक्षों के लिए सहयोग करना और समाधानों को आगे बढ़ाना आसान हो जाता है।

यह मिशन सर्कुलर इकोनॉमी सिद्धांतों पर भी ज़ोर देता है, जो संसाधनों और सामग्रियों को यथासम्भव लम्बे समय तक प्रचलन में रखने को प्राथमिकता देते हैं। इस मॉडल में कचरे को अब त्यागने वाली चीज़ के रूप में नहीं, बल्कि एक मूल्यवान संसाधन के रूप में देखा जाता है। इनका पुन: उपयोग किया जा सकता है। यह न केवल पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभाव को कम करता है, बल्कि पहले से त्यागी गई सामग्रियों के लिए नए सिरे से इस्तेमाल सुनिश्चित करके आर्थिक गतिविधि को भी बढ़ावा देता है।

स्टार्टअप और उद्यमी सर्कुलर इकोनॉमी के इस विजन का समर्थन करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। देश भर में कई नए व्यवसाय उपयोगी उत्पादों में कचरे को रीसाइकिल करने के लिए अभिनव तरीके विकसित करने के लिए काम कर रहे हैं। पार्कों जैसे सार्वजनिक स्थानों के लिए प्लास्टिक कचरे का नई सामग्री में रूपांतरण करना सफलता का एक उल्लेखनीय क्षेत्र रहा है, जो कभी एक बड़ी पर्यावरणीय चुनौती थी।

ये पहल न केवल कचरे में कमी लाने में योगदान देती है, बल्कि रोज़गार भी पैदा करती है और स्थानीय अर्थव्यवस्था का समर्थन करती है।

सरकार ने लगातार पर्यावरणीय चुनौतियों में शामिल प्लास्टिक कचरे को कम करने, प्रबंधित करने और रीसाइकिल करने के लिए कई कदम उठाए हैं। प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियमावली और जन जागरूकता अभियानों के माध्यम से प्लास्टिक की खपत को कम करने और रीसाइक्लिंग को प्रोत्साहित करने के प्रयास किए गए हैं। स्थायित्व पर केंद्रित युवा स्टार्टअप और छोटे उद्यमों का समर्थन करके, सरकार भारत की अपशिष्ट प्रबंधन चुनौतियों का समाधान करने के लिए नवाचार और रचनात्मकता को बढ़ावा दे रही है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का स्वच्छ, हरित भारत का विजन धीरे-धीरे एक वास्तविकता बन रहा है, क्योंकि ये नवाचार जड़ों तक पहुँच रहे हैं। सरकारी निकायों, निजी उद्यमों और स्थानीय समुदायों के बीच सहयोग के माध्यम से, भारत अपने अपशिष्ट से धन के लक्ष्यों की दिशा में महत्त्वपूर्ण प्रगति कर रहा है। झाबुआ पार्क पहल जैसी परियोजनाएँ समुदाय-संचालित समाधानों की शक्ति और कचरे को कंचन में बदलने की क्षमता को उजागर करती हैं। ये स्थानीय कार्य अन्य समुदायों के लिए स्थायी कार्य प्रणालियों को अपनाने, पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक और भविष्य में योगदान देने के लिए एक प्रेरक उदाहरण के रूप में कार्य करते हैं।

भारत का वेस्ट टू वेल्थ मिशन केवल एक सरकारी पहल नहीं है; यह एक सामूहिक क्रांति है, जो अपशिष्ट को मूल्यवान संसाधनों में बदलने के लिए अत्याधुनिक तकनीक, स्थानीय रचनात्मकता और सामुदायिक भागीदारी के समन्वय से फलीभूत होता है। सर्कुलर अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों को अपनाने और अपशिष्ट प्रबंधन में नवाचारों का समर्थन करके भारत एक जीरो-वेस्ट राष्ट्र की ओर बढ़ रहा है, जो भविष्य की पीढ़ियों के लिए पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक विकास, दोनों सुनिश्चित करता है।

शून्य अपशिष्ट आचरण

- **कम करें:** केवल वही खरीदें जो आपके लिए आवश्यक हो।
- **पुनः उपयोग:** कुछ नया खरीदने से पहले जो आपके पास पहले से है, उसका उपयोग करें।
- **मना करें:** ऐसी चीजें न लें जिनकी आपको जरूरत नहीं है, जैसे मुफ्त चीजें, नैपकिन, कट्लरी और स्ट्रॉ।
- **पुनः उपयोग:** उन चीजों के लिए नए उपयोग खोजें जिन्हें कभी बेकार समझा जाता था।
- **पुनर्जीवित करें:** किसी वस्तु को दूसरा जीवन देकर या उसका नवीनीकरण करके उसके जीवन को बढ़ाएँ।
- **रीसाइक्लेबल कचरे के डिब्बों का उपयोग करें :** रीसाइक्लेबल कचरे के डिब्बे शून्य-अपशिष्ट रणनीति का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा हैं।

स्टार्टअप उद्योगों द्वारा भारत की सतत क्रांति का नेतृत्व

स्थायित्व और पर्यावरण चेतना पर बढ़ते फोकस के साथ, इकोकारी और ई-कॉन्शियस जैसे स्टार्टअप भारत की सतत क्रांति का नेतृत्व कर रहे हैं, जो प्लास्टिक कचरे को पर्यावरण के अनुकूल उत्पादों में बदलकर कचरे को कंचन के रूप में बदल रहे हैं।

साथियो, मुझे खुशी है कि आज हमारे देश में कई सारी स्टार्टअप टीम भी पर्यावरण को बढ़ावा देने के लिए ऐसे प्रयासों से जुड़ रही हैं। ई-कॉन्शियस नाम की एक टीम है, जो प्लास्टिक वेस्ट का उपयोग इको-फ्रेंडली प्रोडक्ट बनाने में कर रही है। इसका आइडिया उन्हें हमारे पर्यटन स्थलों, विशेषकर पहाड़ी इलाकों में फैले कचरे को देखकर आया। ऐसे ही लोगों की एक और टीम ने इकोकारी नाम से स्टार्टअप शुरू किया है। ये प्लास्टिक वेस्ट से अलग-अलग खूबसूरत चीज़ें बनाते हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ('मन की बात' सम्बोधन में)

नंदन भट द्वारा स्थापित इकोकारी, पारम्परिक भारतीय बुनाई तकनीकों का उपयोग करके बेकार हो चुके प्लास्टिक बैग, खाद्य रैपर और कैसेट टेप जैसे प्लास्टिक कचरे को बैग, पाउच और घर की सजावट जैसे सुंदर हस्तनिर्मित उत्पादों में बदल देता है। उनकी प्रक्रिया न केवल प्लास्टिक प्रदूषण को कम करती है, बल्कि हाशिए पर पड़े कारीगरों, विशेष रूप से महिलाओं को स्थायी आजीविका भी प्रदान करती है।

-नंदन भट
इकोकारी के संस्थापक

हम अविश्वसनीय रूप से सम्मानित और गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं कि प्रधानमंत्री मोदी ने 'मन की बात' जैसे व्यापक रूप से सम्मानित मंच पर इकोकारी का जिक्र किया। उनकी यह स्वीकृति हमारे कारीगरों और टीम द्वारा प्लास्टिक कचरे को रीसाइकिल करने, महिलाओं को आजीविका के लिए सक्षम बनाने और चरखा तथा हथकरघा की भारतीय विरासत को पुनर्जीवित करने में की गई कड़ी मेहनत की एक जबरदस्त मान्यता है।

इकोकारी ने लाखों किलोग्राम प्लास्टिक कचरे को रीसाइकिल किया है, ताकि लैंडफिल और महासागरों को प्रदूषित होने से बचाया जा सके। हमारा काम एकल उपयोग वाले प्लास्टिक को टिकाऊ, कार्यात्मक उत्पादों में बदल देता है, जिससे प्लास्टिक कचरे में सीधे कमी आती है। रीसाइकिल करने से भिन्न, हम 'क्लोजिंग द लूप' जैसी फिलॉसफी का पालन करते हैं। हम अपने उत्पादों के उपयोग को बढ़ाने के लिए आजीवन निःशुल्क मरम्मत की पेशकश करते हैं और ग्राहकों को संतुष्टि के लिए उत्पादों के खराब होने पर उन्हें वापस करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। यह सुनिश्चित करता है कि हमारा प्लास्टिक एक उद्देश्य की पूर्ति करता रहे और जिम्मेदारी से प्रबंधित हो, जिससे अपशिष्ट प्रबंधन और स्थिरता के लिए एक रीसाइकिलिंग पहल को बढ़ावा मिले। हमारे उत्पादों को www.ecokaari.org पर देखा जा सकता है।

सोनल शुक्ला और वैभव द्वारा संयुक्त रूप से स्थापित ई-कॉन्शियस, प्लास्टिक कचरे को पार्क बेंच और डस्टबिन जैसी कार्यात्मक वस्तुओं में रीसाइकिल करने पर ध्यान केंद्रित करता है। हिमाचल प्रदेश में एक ट्रेक के दौरान प्लास्टिक प्रदूषण के हानिकारक प्रभावों को देखने के बाद उनकी यात्रा शुरू हुई। स्टार्टअप ने 350,000 किलोग्राम से अधिक प्लास्टिक कचरे को रीसाइकिल किया है, जिससे सार्वजनिक स्थानों के लिए आकर्षक उत्पाद तैयार हुए हैं। गैर-सरकारी संगठनों और कॉर्पोरेट फाउंडेशनों के साथ साझेदारी के माध्यम से उन्होंने कचरे के पृथक्करण और रीसाइक्लिंग के महत्त्व के बारे में जागरूकता भी बढ़ाई है।

सोनल और वैभव,
सह-संस्थापक – ई-कॉन्शियस

'मन की बात' के प्रतिष्ठित मंच पर हमारे माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा पहचाना जाना हमारी कल्पना से परे है।

ई-कॉन्शियस ने, खासकर प्लास्टिक कचरे और स्थायित्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने के मामले में स्थानीय समुदायों पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डाला है। हमारे प्रयासों के माध्यम से हमने प्लास्टिक कचरे की समस्या के बारे में बढ़ती समझ देखी है, खासकर उन लोगों के बीच, जिनके साथ हम मिलकर काम करते हैं, जैसे एनजीओ, हाउसिंग सोसाइटी और कॉर्पोरेट पार्टनर।

हमें 350,000 किलोग्राम से अधिक प्लास्टिक कचरे को रीसाइकिल करने और 20 से अधिक व्यक्तियों के लिए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार के अवसर पैदा करने पर गर्व है।

गोबरधन से किसानों को आर्थिक लाभ

जितेन्द्र श्रीवास्तव
संयुक्त सचिव एवं मिशन
निदेशक (गोबरधन)

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विजन को साकार करते हुए, भारत सरकार ने 2018 में स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) के तहत सतत विकास और सर्कुलर अर्थव्यवस्था के लिए गैल्वनाइजिंग ऑर्गेनिक बायो-एग्रो रिसोर्सेज धन GOBARdhan (गोबरधन) पहल की शुरुआत की। इस पहल का उद्देश्य किसानों को आर्थिक लाभ प्रदान करते हुए जैविक कचरे का दोहन करना है। इसके बाद भारत सरकार की गोबरधन 'वेस्ट टू वेल्थ' पहल में एक दर्जन से अधिक मंत्रालयों और विभागों की योजनाओं, पहलों और कार्यक्रमों को शामिल किया गया। इसके परिणामस्वरूप, नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय की अपशिष्ट से ऊर्जा योजना और किफायती परिवहन के लिए पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय की सतत विकल्प (SATAT) योजना, आदि कार्यान्वित की जा रही हैं। अंतर-मंत्रालयी तालमेल का लाभ उठाते हुए सरकार का कार्यान्वयन तंत्र राज्य सरकारों और निजी संस्थाओं के साथ साझेदारी करते हुए एक सामान्य लक्ष्य के लिए आदर्श सम्मिश्रण है।

भारत में विभिन्न स्रोतों से बायोगैस/ सीबीजी उत्पादन करने की उच्च क्षमता है। इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (आईओसीएल) के एक श्वेत पत्र में अनुमान लगाया गया है कि भारत में सालाना 60 एमएमटी तक सीबीजी उत्पादन की क्षमता है। इसमें पशु खाद (18 एमएमटी), कृषि अवशेष (12 एमएमटी) और औद्योगिक अपशिष्ट (8 एमएमटी) शामिल हैं। इसके अलावा, देश भर में उत्पन्न होने वाला नगरपालिका ठोस अपशिष्ट (MSW) अकेले हर साल लगभग 2MMT CBG का योगदान दे सकता है।

भारत अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र का तेजी से विस्तार कर रहा है। इसका लक्ष्य

2030 तक 500 गीगावाट गैर जीवाश्म ईंधन ऊर्जा क्षमता विकसित करना है। पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों के पास पराली जलाने की समस्या के निदान के रूप में इसका उपयोग करने का अवसर है। दिल्ली-एनसीआर में सर्दियों की धुंध को नियंत्रित करते हुए कृषि या धान के भूसे के अवशेषों को सीबीजी में परिवर्तित किया जा सकता है।

गोबरधन पहल के व्यापक कार्यान्वयन से भारत के किफायती और स्वच्छ ऊर्जा जैसे सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में परिवर्तन को बल मिलेगा। इंदौर, पुणे, विशाखापत्तनम, हैदराबाद जैसे शहरों में पहले से ही सीबीजी प्लांट चालू किए गए हैं। गोबरधन के लिए राष्ट्रीय पोर्टल पर 700 से अधिक सीबीजी प्लांट पंजीकृत होने के साथ, सरकार की पहल के सुखद परिणाम मिलने शुरू हो गए हैं। विभिन्न मंत्रालयों और विभागों द्वारा कई परिवर्तनकारी नीतियाँ शुरू की गई हैं :

पाइपलाइन इन्फ्रास्ट्रक्चर फंडिंग : पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय शहरी गैस वितरण नेटवर्क में सीबीजी को इंजेक्ट करने के उद्देश्य से पाइपलाइन इन्फ्रास्ट्रक्चर विकसित करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करता है। इसकी अधिकतम सीमा 28.75 करोड़ रुपये प्रति प्रोजेक्ट है।

बायोमास एकत्रीकरण सहायता : बायोमास एकत्रीकरण मशीनरी की खरीद के लिए वित्तीय सहायता उपलब्ध है। सहायता के तहत खरीद लागत का 50 प्रतिशत तक कवर किया जाता है।

सतत योजना : तेल विपणन कम्पनियाँ (ओएमसी) प्रति किग्रा की धनराशि और जीएसटी की राशि को मिलाकर सुनिश्चित कीमत पर सीबीजी का कुल व्यापार सुनिश्चित करती हैं। 9 सितंबर, 2024 तक 2,212 से अधिक सक्रिय आशय पत्र (एलओआई) जारी किए जा चुके हैं, 72 सीबीजी संयंत्र चालू हो चुके हैं और अब तक 22,097 टन सीबीजी बेचा जा चुका है।

बाजार विकास सहायता : उर्वरक विभाग गोबरधन संयंत्रों से उत्पादित जैविक खाद के विपणन के लिए 1500 रुपये/ एमटी की वित्तीय सहायता प्रदान करता है। अक्तूबर, 2023 में बाजार विकास सहायता (एमडीए) योजना के संचालन के बाद से सीबीजी समर्थकों ने सरकार से 4 करोड़ रुपये की वित्तीय सहायता प्राप्त करते हुए लगभग 1,68,000 मीट्रिक टन कार्बन युक्त जैविक खाद का विक्रय किया है।

उत्पाद शुल्क में रियायत : कम्प्रेस्ड नेचुरल गैस (सीएनजी) के साथ मिश्रित सीबीजी को उत्पाद शुल्क में रियायत मिली हुई है, जो दोहरे कराधान को रोकता है।

सीबीजी मिश्रण का दायित्व (सीबीओ) : सीएनजी (परिवहन) और पीएनजी (घरेलू) को 2025-26, 2026-27 और 2027-28 तक के लिए लक्ष्य दिया गया, जो क्रमशः 1 प्रतिशत, 3 प्रतिशत और 5 प्रतिशत निर्धारित है।

केंद्रीय वित्तीय सहायता (सीएफए) : नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (एमएनआरई) अपने अपशिष्ट से ऊर्जा कार्यक्रम के तहत प्रत्येक सीबीजी परियोजना के लिए 10 करोड़ रुपये तक सीएफए प्रदान करता है। 5 टन सीबीजी संयंत्र के लिए 4 करोड़ रुपये दिए जाते हैं। भारत सरकार ने अब तक देश में सीबीजी इकाइयाँ चलाने वाले उद्यमियों को लगभग 85 करोड़ रुपये की केंद्रीय वित्तीय सहायता (सीएफए) वितरित की है।

बायो-स्लरी मानकीकरण : कृषि एवं किसान कल्याण विभाग ने उर्वरक नियंत्रण आदेश में बायो-स्लरी को मानकीकृत किया है। एग्री-इंफ्रा फंड (एआईएफ) सीबीजी संयंत्रों के लिए 2 करोड़ रुपये तक के ऋण पर 3 प्रतिशत ब्याज सहायता प्रदान करता है।

शहरी सहायता : आवास एवं शहरी कार्य मंत्रालय 25 प्रतिशत से 50 प्रतिशत (यूएलबी आबादी के आधार पर) की केंद्रीय सहायता प्रदान करता है, जिसकी सीमा प्रति 100 टीपीडी फीडस्टॉक पर 18 करोड़ रुपये है।

एकीकृत पंजीकरण पोर्टल : पेयजल और स्वच्छता विभाग द्वारा विकसित यह पोर्टल सीबीजी और बायोगैस संयंत्रों के पंजीकरण और प्रबंधन को सुव्यवस्थित करता है, जिससे सरकारी योजनाओं तक पहुँच बढ़ती है।

गोबरधन पहल भारत के जैविक अपशिष्ट संसाधनों की विशाल क्षमता को अनलॉक करने में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। गोबरधन पहल भारत के महत्त्वाकांक्षी ऊर्जा सम्बंधी लक्ष्यों को पूरा करने में योगदान देने के साथ 'आत्मनिर्भर भारत' और 'मेक इन इंडिया' के आदर्श वाक्य को बढ़ावा देते हुए दीर्घकालिक पर्यावरणीय और आर्थिक स्थायित्व को भी बढ़ावा देगी।

पोषण भी, पढ़ाई भी

डॉ. रीता पटनायक
संयुक्त निदेशक (ईसीसीई)
राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान (एनआईपीसीसीडी)

भारत के 'अमृतकाल' में सभी के लिए समान विकास सुनिश्चित करना, हमारे बच्चों के समग्र विकास पर निर्भर करता है। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की सक्षम आँगनवाड़ी और मिशन पोषण 2.0 योजना का एक हिस्सा - 'पोषण भी, पढ़ाई भी (PBPB)' - राष्ट्र के भविष्य को आकार देने की शक्ति रखता है। यह पहल न केवल पोषण में सुधार लाने पर केंद्रित है, बल्कि गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक बचपन की शिक्षा सुनिश्चित करने पर भी केंद्रित है।

देश भर में लगभग 13.9 लाख आँगनवाड़ी केंद्र 6 वर्ष से कम आयु के लगभग 8 करोड़ लाभार्थी बच्चों को पूरक पोषण और प्रारम्भिक देखभाल तथा शिक्षा प्रदान कर रहे हैं, जिससे यह दुनिया में ऐसी सेवाओं का सबसे बड़ा सार्वजनिक प्रावधान बन गया है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि 6 वर्ष की आयु तक 85 प्रतिशत मस्तिष्क विकास हो जाता है, आँगनवाड़ी हमारे बच्चों की मजबूत नींव बनाने के लिए एक महत्त्वपूर्ण आधार बन जाता है।

'पोषण भी, पढ़ाई भी', एक अग्रणी प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) कार्यक्रम है, जो यह सुनिश्चित करता है कि भारत में अच्छी तरह से प्रशिक्षित आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के साथ उच्च गुणवत्ता वाला प्री-स्कूल नेटवर्क हो, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप है। सक्षम आँगनवाड़ी और मिशन पोषण 2.0 के तहत आँगनवाड़ी सेवा योजना के पदाधिकारियों के प्रशिक्षण के लिए पूरे देश में दो स्तरीय प्रशिक्षण कार्यान्वयन मॉडल का पालन किया जा रहा है। स्तर 1 में राज्य स्तरीय मास्टर प्रशिक्षकों (एसएलएमटी) का दो दिवसीय प्रशिक्षण शामिल है। स्तर 2 में आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं का 3 दिवसीय प्रशिक्षण शामिल है। 11 सितम्बर, 2024 तक 34 राज्यों के 475 जिलों में पोषण भी, पढ़ाई भी कार्यक्रमों के तहत 15748 एसएलएमटी को और 13 राज्यों के 75 जिलों में 11643 आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित किया गया है। मंत्रालय ने प्रशिक्षण के लिए वित्त वर्ष 2023-24, 2024-25 और 2025-26 के लिए 476.06 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं।

पोषण भी, पढ़ाई भी, खेल के बहुमुखी लाभों को दोहराता है, जो बच्चे के समग्र विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है। यह सुनिश्चित करता है कि खेल के माध्यम से प्राप्त ज्ञान बच्चे के अनुभव का स्थायी हिस्सा बन जाए। इसका उद्देश्य राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा– आधारभूत चरण 2022 में उल्लिखित प्रत्येक क्षेत्र में बच्चों के विकास को लक्षित करना है, जैसे शारीरिक तथा मानसिक विकास, संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक-भावनात्मक-नैतिक विकास, सांस्कृतिक/कलात्मक विकास, संचार तथा आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (एफएलएन) का विकास।

पोषण भी, पढ़ाई भी, खेल-

आधारित और आनंदमय शैक्षिक गतिविधि आधारित शिक्षण पद्धति की हिमायत करता है, जो विशेष रूप से 0-3 साल के बच्चों के साथ-साथ 3-6 साल के बच्चों के महत्त्वपूर्ण विकास पर लक्षित है, जिसमें दिव्यांग बच्चों के लिए विशेष सहायता शामिल है। यह सरल शिक्षण-अधिगम सामग्री और स्वदेशी खिलौनों के उपयोग की भी हिमायत करता है, जो स्थानीय रूप से उपलब्ध हैं और सांस्कृतिक रूप से स्वीकार्य हैं।

इस पहल का ध्यान दो प्रमुख पहलुओं पर केंद्रित है– 3 वर्ष तक की आयु के बच्चों के लिए प्रारम्भिक विकासात्मक गतिविधियाँ और 3-6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए प्रारम्भिक बाल्यवस्था प्रोत्साहन और शिक्षा। इनमें विशेष आवश्यकता वाले बच्चे भी शामिल हैं। महिला और बाल विकास मंत्रालय द्वारा शुरू किए गए दो महत्त्वपूर्ण दस्तावेज, 'पोषण भी, पढ़ाई भी' के इस प्रशिक्षण का मार्गदर्शन करते हैं। पहले दस्तावेज, नवचेतना का उद्देश्य 36

महीने के विकासात्मक गतिविधि कैलेंडर के रूप में 140 आयु-विशिष्ट गतिविधियों के माध्यम से जन्म से तीन साल तक के बच्चों का समग्र विकास करना है। ये गतिविधियाँ बच्चे को इस उम्र के विकासात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करती हैं। यह दिव्यांग बच्चों की जाँच तथा समावेशन, 'गर्भ संस्कार' (गर्भावस्था के दौरान की परम्पराएँ) और मातृ मानसिक स्वास्थ्य पर भी जोर देता है।

दूसरा दस्तावेज आधारशिला है, जो तीन से छह वर्ष की आयु के बच्चों के लिए प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम है। यह पाठ्यक्रम भारतीय और अंतरराष्ट्रीय शोध का मिश्रण है, जो आनंदमय खेल-आधारित शिक्षा को बढ़ावा देता है। यह 130 से अधिक गतिविधियाँ प्रदान करता है, जो घर के अंदर और बाहर, बच्चों और शिक्षक के नेतृत्व वाली शिक्षा को बढ़ावा देती हैं । इसके माध्यम से हमारा लक्ष्य बच्चों को आजीवन सीखने के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करना और उन्हें प्राथमिक शिक्षा के लिए पूरी तरह से तैयार करना है।

आधारशिला और नवचेतना मिलकर देश में बाल्यावस्था की देखभाल और शिक्षा के प्रति हमारे दृष्टिकोण में क्रांतिकारी बदलाव लाएँगे। इनका निर्बाध कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए, हम पोषण ट्रैकर के माध्यम से प्रौद्योगिकी का लाभ उठाएँगे, जो आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को समय पर डिजिटल संकेत और मार्गदर्शन प्रदान करेगा।

एक मजबूत, आत्मनिर्भर भारत का हमारा सपना हमारे सबसे कम उम्र के नागरिकों को सर्वोत्तम सम्भव शुरुआत प्रदान करने से प्रारम्भ होता है। 'पोषण भी, पढ़ाई' भी के माध्यम से, हम 'हर बच्चे का विकास' के माध्यम से 'विकसित भारत' के सपने को सुनिश्चित करते हुए भारत के लिए एक उज्ज्वल, स्वस्थ और शिक्षित भविष्य के बीज बो रहे हैं।

पोषण माह

स्वास्थ्य की मजबूत नींव की दिशा में प्रभावी कदम

भारत बाल स्वास्थ्य और पोषण को बढ़ावा देने की दिशा में महत्त्वपूर्ण प्रयास कर रहा है। उसका मानना है कि भावी पीढ़ियों की आरोग्यता पोषण और देखभाल की मज़बूत नींव पर निर्भर करती है। सितम्बर माह को राष्ट्रीय पोषण माह के रूप में नामित किया गया है और यह जागरूकता बढ़ाने तथा कुपोषण से निपटने के लिए कार्य करता है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' सम्बोधन में परिवारों, समाज और राष्ट्र के भविष्य को आकार देने में बाल पोषण की महत्त्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया। 1 सितम्बर से 30 सितम्बर तक चलने वाली यह महीने भर की पहल, देश भर में विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से बच्चे और मातृ पोषण पर ध्यान केंद्रित करती है।

समुदाय स्तर की यह पहल जमीनी स्तर पर बदलाव ला रही है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण यानी एनएफएचएस-5 के अनुसार, पाँच साल से कम उम्र के बच्चों में बौनापन 2015-16 में 38.4 प्रतिशत से घटकर 2019-21 में 35.5 प्रतिशत हो गया है। यह उपलब्धि पोषण अभियान जैसे सरकारी प्रयासों के क्रमिक प्रभाव को दर्शाती है।

एक महीने तक चलने वाले इस अभियान के माध्यम से केंद्रित प्रयास किए जा रहे हैं, साथ ही मिड-डे मील योजना, एकीकृत बाल विकास सेवा (आईसीडीएस) जैसी विभिन्न सरकारी योजनाओं के माध्यम से बाल और मातृ पोषण पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। कुपोषण मुक्त भारत की दिशा में सरकार का यह अथक प्रयास केवल स्वास्थ्य समस्या को हल करने के लिए नहीं है, बल्कि यह स्वस्थ, मजबूत और अधिक सुखद भविष्य की नींव रखने का निश्चय है।

कुपोषण से निपटने के लिए सरकारी पहल

01 पोषण अभियान

पोषण अभियान का उद्देश्य बच्चों और महिलाओं में बौनेपन, कुपोषण, एनीमिया और जन्म के समय कम वजन की समस्या से निपटना है। इसका लक्ष्य हर साल बौनेपन तथा कुपोषण को 2-2 प्रतिशत और एनीमिया को 3 प्रतिशत कम करना है। पोषण अभियान के प्रमुख घटकों में आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण, समुदाय-आधारित कार्यक्रम और डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से वास्तविक समय की निगरानी शामिल हैं।

02 पोषण मेला

पोषण माह के दौरान, सरकार पूरे देश में पोषण मेले और शिविर आयोजित करती है, जहाँ से समुदाय संतुलित आहार, स्थानीय तथा पौष्टिक भोजन और नए-नए व्यंजनों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। एनीमिया के निदान और उपचार के लिए, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में एनीमिया शिविर भी लगाए जाते हैं, जिससे बड़ी संख्या में देश की महिलाओं और बच्चों में एनीमिया का निदान होता है।

03 घर पर नवजात शिशु की देखभाल (एचबीएनसी)

शिशु की प्रारम्भिक देखभाल सुनिश्चित करने के लिए, आँगनवाड़ी कार्यकर्ता और स्वास्थ्य पेशेवर नवजात शिशुओं के घर जाकर उनकी पोषण सम्बंधी जरूरतों का आकलन करते हैं और जीवन के पहले 42 दिनों तक उनके विकास की निगरानी करते हैं। ये दौरे व्यक्तिगत सहायता प्रदान करते हैं और स्तनपान, पूरक आहार तथा समग्र बाल पोषण के बारे में जागरूकता बढ़ाते हैं। सरकार का उद्देश्य कुपोषण की पहचान कर, उसे दूर करके यह सुनिश्चित करना है कि बच्चों के जीवन की शुरुआत स्वस्थ शरीर से हो।

04 पोषण भी, पढ़ाई भी अभियान

सरकार ने यह मानते हुए कि पोषण और शिक्षा आपस में जुड़े हुए हैं, 'पोषण भी, पढ़ाई भी' पहल शुरू की है, जिसमें बाल पोषण को नई शिक्षा नीति से जोड़ा गया है। यह अभियान यह सुनिश्चित करने पर केंद्रित है कि बच्चों को न केवल उचित पोषण मिले, बल्कि उनके संतुलित विकास के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा भी मिले। पोषण सम्बंधी चुनौतियों से ज्ञान सम्बंधी कमी हो सकती है और इस एकीकृत दृष्टिकोण का उद्देश्य शारीरिक और मानसिक विकास, दोनों को पोषित करना है।

05 पोषण ट्रैकर

वास्तविक समय की निगरानी के लिए मोबाइल ऐप पोषण ट्रैकर के एकीकरण से पूरक पोषण, विकास निगरानी और स्वास्थ्य जाँच जैसी सेवाओं की उपलब्धता का पता लगाने में मदद मिली है। पोषण ट्रैकर एप्लिकेशन के तहत कुल 13.95 लाख आँगनवाड़ी पंजीकृत हैं, जिससे कुपोषण के खिलाफ लड़ाई में पारदर्शिता और बेहतर समन्वय सुनिश्चित होता है।

विश्व संस्कृत दिवस

समाज का हित, संस्कृत में निहित

“दुनिया में इन हजारों वर्षों में कितनी ही भाषाएँ आईं और चली गईं। नई भाषाओं ने पुरानी भाषाओं की जगह ले ली, लेकिन हमारी संस्कृत आज भी उतनी ही अक्षुण्ण, उतनी ही अटल है। संस्कृत समय के साथ परिष्कृत तो हुई, लेकिन प्रदूषित नहीं हुई। इसका कारण संस्कृत का परिपक्व व्याकरण विज्ञान है। केवल 14 माहेश्वर सूत्रों पर टिकी ये भाषा हजारों वर्षों से शस्त्र और शास्त्र, दोनों ही विधाओं की जननी रही है।”

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ सम्बोधन में)

संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है। संस्कृत को ‘देवभाषा’ के रूप में भी सम्बोधित किया जाता है, क्योंकि यह प्राचीन भारत के पवित्र ग्रंथों की भाषा है, जिसमें देवताओं के सन्देश और ज्ञान को व्यक्त करने के लिए इसका उपयोग किया गया है। संस्कृत भाषा वेदों, उपनिषदों और भगवद् गीता जैसे पवित्र ग्रंथों की अभिव्यक्ति का माध्यम रही है। इसके पुनरुत्थान के लिए प्रत्येक वर्ष सावन मास की पूर्णिमा को यानी रक्षाबंधन के दिन ‘विश्व संस्कृत दिवस’ मनाया जाता है। 2024 में अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार इसे 19 अगस्त को मनाया गया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ‘मन की बात’ कार्यक्रम में विश्व संस्कृत दिवस का उल्लेख किया। इस कार्यक्रम में उन्होंने लिथुएनिया के एक प्रोफेसर व्यतिस् विदूनस् द्वारा संस्कृत हित में चलाए जा रहे अभियान Sanskrit on the Rivers के बारे में भी संक्षेप में बताया।

प्रोफेसर विदूनस् लिथुएनिया के विल्नूइस विश्वविद्यालय में संस्कृत के प्राध्यापक हैं। उन्होंने 2016 में कुछ पूर्व और उस समय के वर्तमान छात्रों के साथ मिलकर Sanskrit on the Rivers की शुरुआत की। इस कार्यक्रम के माध्यम से वे लोगों को नदियों के बारे में जागरूक कर रहे हैं। Sanskrit on the Rivers अभियान के तहत प्रोफेसर विदूनस् छात्रों के साथ नेरिस नदी के पास जाते हैं और वहाँ सायंकाल के दौरान संस्कृत ग्रंथों का अध्ययन करते हैं। इस वर्ष उन्होंने श्री रामायण के कुछ अध्यायों का अध्ययन किया।

“प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जब मेरे अभियान के बारे में ‘मन की बात’ कार्यक्रम में उल्लेख किया, तब मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। मैं बहुत सौभाग्यशाली हूँ।”

प्रो. व्यतिस् विदूनस्

विश्व में लिथुएनिया जैसे और भी कई देश हैं, जहाँ पर संस्कृत भाषा से सम्बंधित विषयों पर समग्रता से विचार किया जा रहा है। आज विश्व में ऐसी तमाम गतिविधियाँ हो रही हैं, जो वैश्विक स्तर पर संस्कृत की बढ़ती स्वीकार्यता के बारे में बताती हैं। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय ने संस्कृत को एक भाषा विकल्प के रूप में पेश किया है, जबकि हार्वर्ड विश्वविद्यालय में संस्कृत और भारतीय दर्शन में पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। इसके अलावा ब्रिटिश लाइब्रेरी में संस्कृत पांडुलिपियों का विशाल संग्रह है, जो विश्व साहित्य में इसके महत्त्व को बताता है। गूगल ने भी संस्कृत इनपुट टूल विकसित किया

“संस्कृत शास्त्रीय एवं लोक भाषा के साथ-साथ भारतीय भाषाओं की संवाहिका भी है। यही कारण है कि संस्कृत भारतीय भाषाओं में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में सम्मिलित है।”

-प्रो. श्रीनिवास वरखेड़ी
कुलपति, केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

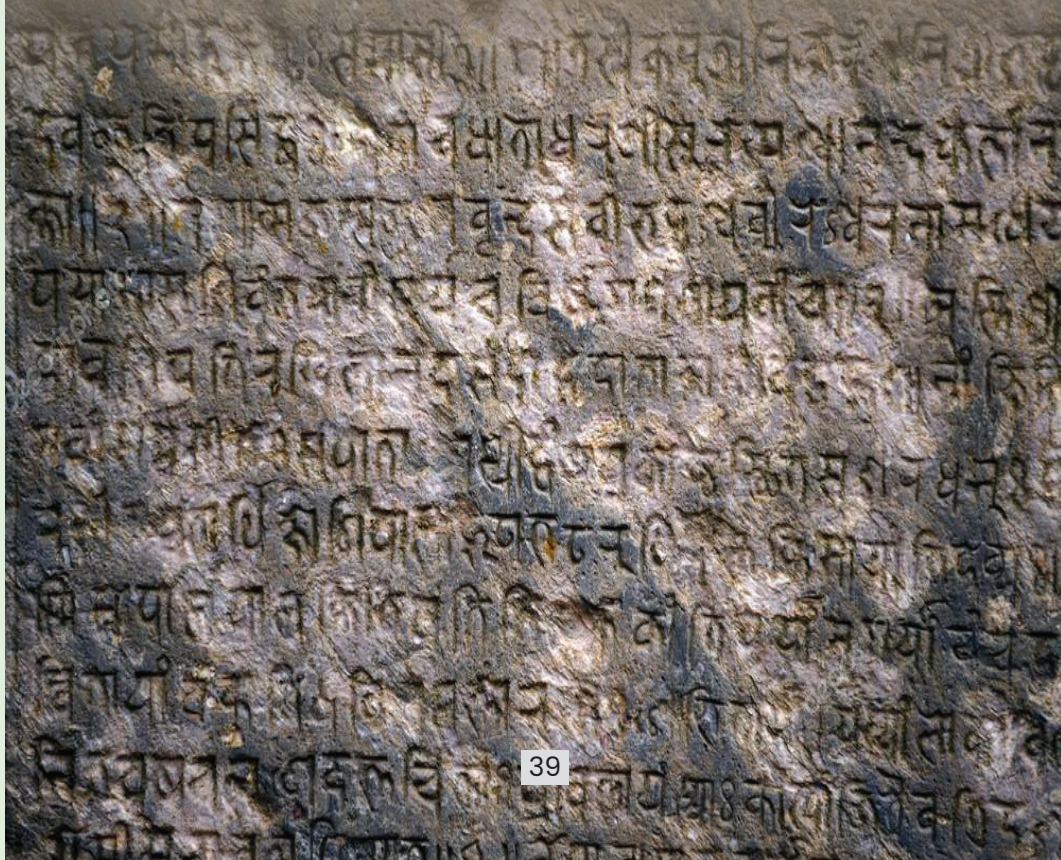

है, जिससे उपयोगकर्ताओं के लिए इस भाषा में टाइप करना आसान हो गया है।

अमृतम् संस्कृतम् मित्र, सरसम् सरलम् वचः।
एकता मूलकम् राष्ट्रे, ज्ञानविज्ञान पोषकम्।।

अर्थात, हमारी संस्कृत भाषा सरस भी है, सरल भी है। संस्कृत अपने विचारों, अपने साहित्य के माध्यम से ज्ञान-विज्ञान और राष्ट्र की एकता का भी पोषण करती है, उसे मज़बूत करती है।

संस्कृत भाषा को कई भाषाओं एवं बोलियों की जननी होने का गौरव प्राप्त है। संस्कृत का लैटिन, ग्रीक, फ्रेंच, जर्मन आदि विदेशी भाषाओं के साथ भी घनिष्ठ सम्बंध है। कर्नाटक राज्य के शिवमोग्गा जिले में स्थित मत्तूर गाँव में आज भी आम बोल-चाल के लिए संस्कृत भाषा का उपयोग किया जाता है। संस्कृत की धारणा में वेद है, विचार में उपनिषद, विश्वास में पुराण और ज्ञान में आयुर्वेद, योग तंत्र और ज्योतिष है, अध्याय में व्याकरण है। संस्कृत अनुशासन और मुक्ति; दोनों की भाषा है।

वर्तमान सरकार संस्कृत भाषा को आम लोगों तक पहुँचाने के लिए विभिन्न प्रयास कर रही है। इसके तहत, संस्कृत भाषा के अध्ययन, अनुसंधान और उपयोग को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2020 में तीन विश्वविद्यालयों को केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया, साथ ही दूरदर्शन और आकाशवाणी भी संस्कृत भाषा को सिखाने के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। दूरदर्शन समाचार प्रतिदिन 'वार्ता' नाम से एक संस्कृत समाचार बुलेटिन भी प्रसारित करता है, वहीं आकाशवाणी भी देश-विदेश से सम्बंधित प्रमुख ख़बरों को संस्कृत में जारी करता है। संस्कृत भारती जैसे सामाजिक संगठन भी संस्कृत पठन-पाठन को सुगम बनाने के लिए कार्यरत हैं।

विश्व में संस्कृत का बढ़ता प्रभाव

प्रो. श्रीनिवास वरखेड़ी
कुलपति,
केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

यह बहुत ही हर्ष का विषय है कि यशस्वी एवं लोकप्रिय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने देश की समग्र युवा पीढ़ी, छात्र-छात्राओं तथा देशवासियों को अपने अनूठे कार्यक्रम 'मन की बात' के माध्यम से उद्बोधित किया था, जिसका विशेषकर युवा वर्ग पर बहुत ही प्रेरणास्पद एवं दूरगामी प्रभाव पड़ रहा है। ज्ञातव्य है कि इस 'मन की बात' के रेडियो प्रसारण का ऐतिहासिक श्रीगणेश 03.10.2014 में किया गया था।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के इन शिक्षाप्रद एवं भावोष्मा से भरे शब्दों को प्रत्येक माह आकाशवाणी द्वारा प्रसारित एवं सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया जाता है। राष्ट्र एवं चिंतन का प्रतीक यह प्रसारण एवं प्रकाशन एक बहुत ही बड़ी साहित्यिक धरोहर है और आने वाली पीढ़ी के लिए सतत प्रेरणादायक भी है। यह भी कोई कम महत्त्वपूर्ण तथ्य नहीं है कि भूमंडलीकरण के कारण साहित्य की पत्र-पत्रिकाएँ विश्व भर में न्यूनतर हो रही हैं, लेकिन भारत में भारतीय साहित्य की संवैधानिक मान्यताओं की संख्या बढ़ रही है। संस्कृत भाषा की आधुनिक रचनाधर्मिता की विधाओं की संख्या में भी निरंतर श्रीवृद्धि हो रही है, जो भारतीय साहित्य की जीवंतता और विपुलता का ही द्योतक है। संस्कृत की ही नई-नई पत्र-पत्रिकाएँ भी अपनी चतुरस्र पाठ्यसामग्री के साथ भारतीय साहित्य को सुशोभित कर रही हैं। ज्ञातव्य है कि माननीय प्रधानमंत्री जी ने अपने 'मन की बात' के प्रसारण की अनेक शृंखलाओं में संस्कृत साहित्य के उद्धरणों को प्रस्तुत किया है। इसका बहुत बड़ा कारण यह भी है कि संस्कृत भविष्य की भाषा है, क्योंकि भारत का समग्र अर्थात् पूरा का पूरा भारतीय साहित्य एवं संस्कृति संस्कृत से ही उपकृत है। अतः संस्कृत से सारी भारतीय भाषाएँ प्राणवंत होने के कारण भारतीय भाषाओं के केंद्र में यही संस्कृत भाषा स्पंदित है। यहाँ इसका भी ध्यान रहे कि यह मात्र इसलिए सच नहीं है कि भारतीय साहित्य एवं संस्कृति इसमें समाहित है, अपितु संस्कृत भारतीय अस्मिता का चैतन्य भी है। इसी उद्देश्य से 'विकसित भारत - 2047' के सुनहरे सपनों को साकार करने के लिए यह आवश्यक है कि संस्कृत में जो यह चैतन्य है, उसे भारत के पुनर्निर्माण में राष्ट्र के अंत्योदय तक पूर्णतः सम्पोषित करने का प्रयास

किया जाना चाहिए। भाषा अपनी संस्कृति की अस्मिता के साथ-साथ धरोहर के रूप में अपने सांस्कृतिक इतिहास का अंत:साक्ष्य भी होती है और यह संस्कृत वांग्मय का अंत:साक्ष्य सागर की जीवंतता का प्रतीक है, जिसमें सारी भारतीय भाषाएँ समाहित होकर किल्लोलित हैं।

अतः संस्कृत को भारतीय भाषाओं तथा संस्कृति का मूल स्रोत माना जाना चाहिए। यहाँ इसका भी ध्यान रहे कि संस्कृत भाषा ने बहुत सी विदेशी भाषाओं को भी अनुप्राणित किया है। उदाहरण के रूप में इसके भाषाविज्ञान को भी लिया जा सकता है। आज पूरी दुनिया में विविध भेद-प्रभेद के रूप में साहित्य की भाषिक संस्कृति के अर्थान्वेषण के लिए भाषा अध्ययन का विस्तृत शास्त्र है। इसकी आत्मा पाणिनि के अष्टाध्यायी में ही समाहित है। इसलिए संस्कृत विद्याओं के द्वारा ही हम पुनः विश्वगुरु बन सकते हैं और भारत के चतुर्दिक् विकास की स्वर्णिम संकल्पना को साकार कर सकते हैं।

भारत ने मात्र प्रजा सत्तात्मक चिंतन का प्रथम वैश्विक उद्घोष ही नहीं किया है, बल्कि इसकी इस उद्घोषणा ने जनतंत्र को अध्यात्म से भी सिक्त किया है। अतः इस तरह का लोकतंत्र विश्व के लिए सर्वथा अनुकरणीय है। इस जन समावेशी लोकतंत्र में आवाज़ के अध्यात्म, दर्शन और चिंतन आदि के रूप में संस्कृत ने ही उनकी प्राण प्रतिष्ठा की है। अतः न केवल भारतवर्ष, अपितु विश्व को अध्यात्म की ओर ले जाने के लिए संस्कृत को पढ़ना और समझना ही होगा। आज के वैश्विक समाज में भौतिक लोलुपता तथा अशांति को अपकृत करने और विश्वशांति तथा भ्रातृत्व भाव को पुनर्स्थापित करने में संस्कृत की बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका होगी। इसका भी ध्यान रहे कि सनातन धर्म का आधार भी संस्कृत में ही निहित है। सनातन धर्म मानवता के एकात्मवादी वैश्विक सन्देश द्वारा अपने वैदिक चिंतनों तथा दर्शनों के आधार पर पूरी दुनिया का आह्वान करता रहा है। इसलिए भारतीय संस्कृति प्रांत भेद तथा भाषा भेद से हट कर अनेकता में एकता के समन्वित स्वभाव तथा इसके भारतीय सौंदर्य स्वरूप से संतृप्त भी है। इस सुखद एकता की भावना को सुदृढ़ बनाने में एक मात्र शक्ति संस्कृत भाषा और उसके वांग्मय का नदीष्ण वैशाल्य तथा औदात्य है।

संस्कृत शास्त्रीय एवं लोक भाषा के साथ-साथ भारतीय भाषाओं की संवाहिका भी है। यही कारण है कि संस्कृत भारतीय भाषाओं में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में सम्मिलित है। भारतीय भाषा की जो परिभाषा बनती है, उसका शास्त्र ही

संस्कृत के चिंतन में सन्निहित है, क्योंकि संस्कृत का ज्ञान और उसका दर्शन सर्वथा समन्वित होकर अखण्डित है। यही कारण है कि भारत में अनेक प्रांत तथा अनेक प्रांतीय भाषाएँ हैं, लेकिन जब हम समग्र भारत की बात करते हैं, तो भारत माता के भाल पर भारती का तिलक ही सर्वाधिक चमत्कृत होता दिखता है। अब तो विश्व के लिए यह और भी अधिक प्रासंगिक हो गया है कि भारत की मूल भारतीयता के अन्वेषण तथा पुनर्स्थापन में संस्कृत का नवाचारी और समावेशी प्रयोग अनिवार्य रूप से किया जाए।

अतः शिक्षा में भारतीयता की मूल पहचान तथा धरोहर बनाए रखने के लिए संस्कृत को सर्वथा प्राथमिकता मिलनी चाहिए। इससे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की 'मन की बात' के प्रसंग में आए 'पंच प्रण' – सभी ज्ञान 'विकसित भारत -2047' के लिए ही हो, औपनिवेशिक मानसिक दासता से मुक्ति मिले, भारतीय ज्ञान - संस्कृति - सभ्यता में अक्षुण्ण श्रद्धा सर्वदा बनी रहे, भारत की अखण्डता प्रति क्षण बनी रहे तथा स्वकर्त्तव्य पालन में सर्वदा निष्ठा बनी रहने की जो बात की गई है, इससे 'पंच प्रण' के परिपालन एवं संवर्द्धन में संस्कृत की अद्भुत एवं अकथनीय भूमिका होगी।

माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा 'मन की बात' की 113वीं कड़ी में 'विश्व संस्कृत दिवस' के उपलक्ष्य पर दुनिया के समस्त संस्कृत अध्येताओं तथा अनुरागियों को उद्बोधित करते हुए संस्कृत के प्रति विश्व के बढ़ते आकर्षण और अनुसंधान की नवाचारी सम्भावनाओं को लेकर जो अन्वेषणा की जा रही है, उसके महत्त्व पर भी उन्होंने बहुत ही सारगर्भित प्रकाश डाला, जो संस्कृत के विश्व कुटुम्ब समाज के चित्त में सदा सिक्त ही रहेगा। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा 'मन की बात' में संस्कृत से जुड़े अनेक संदर्भों ने संस्कृत समाज को सर्वथा गौरवान्वित किया है और उनमें आशा और आत्मविश्वास को भी जागृत किया है।

यह सच है कि विकसित भारत के संकल्प में भारतीय सभ्यता, ज्ञान परम्परा तथा संस्कृति के आयामों को संस्कृत के बिना नहीं जोड़ा जा सकता है। इसलिए माननीय प्रधानमंत्री जी ने संस्कृत के आधार पर ही हमें भारत की परिकल्पना दी है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' अब विश्व का नया मंत्र बन गया है। विश्व के 50 से अधिक देशों में संस्कृत का अध्ययन-अध्यापन तथा संस्कृत भारती के द्वारा सम्भाषण आंदोलन भी प्रखर रूप से प्रचलित है। वैश्विक स्तर पर योग, आयुर्वेद तथा अध्यात्म के द्वारा विश्ववारा संस्कृति को विकसित तथा विस्तारित करने के लिए संस्कृत ही एकमात्र साधन है। यही माननीय प्रधानमंत्री जी की वैश्विक विशाल दृष्टि है।

विश्व में भारतीय संस्कृति के प्रति बढ़ती अपार श्रद्धा और निष्ठा की सम्पुष्टि इस तथ्य से भी होती है, जब माननीय प्रधानमंत्री जी ने अपने 'मन की बात' के 113वें प्रसारण में यूरोप के लिथुएनिया देश के एक आचार्य व्यतिस् विदूनस् के विषय में चर्चा करते हुए बोला है कि आचार्य विदूनस् के ही सत् प्रयास से कुछ लोगों का एक गण बनाया गया, जिसने वहाँ की नेरिस नदी के किनारे एकत्र होकर वेदों और गीता का पाठ किया। भारत की बौद्धिक एवं सांस्कृतिक गूँज आज भी प्रतिगुंजित हो रही है। इस प्रकार विश्व में बढ़ती संस्कृत की उपयोगिता स्पष्ट है।

फिट इंडिया मूवमेंट

स्वस्थ और श्रेष्ठ भारत के लक्ष्य की ओर

"हम सबके जीवन में fitness का बहुत महत्त्व है। फिट रहने के लिए हमें अपने खानपान, रहन-सहन सब पर ध्यान देना होता है। लोगों को fitness के प्रति जागरूक करने के लिए ही 'फिट इंडिया अभियान' की शुरुआत की गई। स्वस्थ रहने के लिए आज हर आयु, हर वर्ग के लोग योग को अपना रहे हैं।"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' सम्बोधन में)

स्वस्थ शरीर के अंदर स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। इसका सीधा मतलब है कि शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य आपस में जुड़े हुए हैं। सशक्त और श्रेष्ठ भारत का निर्माण तभी सम्भव है, जब उसके नागरिक शारीरिक रूप से मज़बूत और मानसिक रूप से संतुलित हों। स्वस्थ नागरिक अधिक उत्पादक, रचनात्मक और ज़िम्मेदार होते हैं, जो समाज और राष्ट्र की प्रगति में अहम योगदान देते हैं। इसलिए सशक्त और श्रेष्ठ भारत के निर्माण के लिए नागरिकों का शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहना अत्यंत आवश्यक है।

29 अगस्त, 2019 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू किया गया 'फिट इंडिया मूवमेंट', भारत को स्वस्थ और फिट राष्ट्र बनाने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। यह न केवल शारीरिक फिटनेस को बढ़ावा देने पर केंद्रित है, बल्कि लोगों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए भी जागरूक और प्रेरित करता है। मौजूदा समय में तनावपूर्ण जीवनशैली और अस्वास्थ्यकर आदतों के कारण कई स्वास्थ्य समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। ऐसे में फिट इंडिया मूवमेंट की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस अभियान की शुरुआत करते हुए कहा था "फिटनेस एक शब्द नहीं है, बल्कि स्वस्थ और समृद्ध जीवन की एक ज़रूरी शर्त है।"

इस अभियान के तहत लोगों को नियमित व्यायाम, योग और अन्य शारीरिक गतिविधियों को अपनाने के लिए प्रेरित किया जाता है। इसके अलावा, स्वस्थ आहार की आदतों को भी बढ़ावा दिया जाता है, जिससे लोग अपने शरीर और मन को स्वस्थ रख सकें।

फिट इंडिया मूवमेंट के तहत, सरकार की ओर से 'फिट इंडिया संवाद', 'फिट इंडिया क्विज़' 'फिट इंडिया स्कूल वीक' और 'फिट इंडिया फ्रीडम रन' जैसे कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं। ये कार्यक्रम न केवल शारीरिक शिक्षा को प्रोत्साहित करते हैं, बल्कि बच्चों और युवाओं को स्वस्थ आदतें अपनाने के लिए प्रेरित भी करते हैं।

इस अभियान के तहत 'फिट इंडिया मोबाइल एप' भी लॉन्च किया गया है, जो लोगों को उनकी फिटनेस के स्तर को मापने और सुधारने में मदद करता है और विभिन्न फिटनेस गतिविधियों और व्यायाम के सुझाव भी प्रदान करता है।

फिट इंडिया मूवमेंट की सफलता को इसके प्रभाव और व्यापक स्वीकार्यता से आँका जा सकता है। अब तक लाखों लोग अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हुए हैं और उन्होंने स्वस्थ जीवनशैली

को अपनाया है। सोशल मीडिया और अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से फिटनेस सम्बंधी जानकारी और प्रेरणा साझा की जा रही है, जिससे यह अभियान एक जनांदोलन का रूप ले चुका है।

ग्रामीण क्षेत्रों में फिटनेस के प्रति जागरूकता बढ़ाना, विभिन्न आयु वर्गों में शारीरिक गतिविधियों को बढ़ावा देना और लोगों को नियमित व्यायाम करने के लिए प्रेरित करना, इस अभियान की कुछ प्रमुख चुनौतियाँ हैं। इस सम्बंध में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा था, "फ़िट इंडिया मूवमेंट भले ही सरकार ने शुरू किया है, लेकिन इसका नेतृत्व देश की जनता को ही करना है।" सरकार की ओर से इस दिशा में कई प्रयास किए जा रहे हैं।

फिट इंडिया मूवमेंट को जन-जन तक पहुँचाने के लिए स्थानीय स्तर पर भी कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। सरकार ने इसे एक सतत प्रक्रिया के रूप में विकसित करने का लक्ष्य रखा है, ताकि लोग न केवल शारीरिक रूप से बल्कि मानसिक रूप से भी स्वस्थ रह सकें। सरकार के निरंतर प्रयासों और जनता की सक्रिय भागीदारी से इस आंदोलन में भारत को विश्व-पटल पर एक फिट, स्वस्थ और श्रेष्ठ राष्ट्र के रूप में प्रस्तुत करने की सारी सम्भावनाएँ मौजूद हैं।

तेलुगु

भाषा और संस्कृति की विरासत

> दोस्तो, इस महीने की 29 तारीख को तेलुगु भाषा दिवस भी है। यह वास्तव में एक अद्भुत भाषा है। मैं दुनिया भर के तेलुगु भाषियों को तेलुगु भाषा दिवस की शुभकामनाएँ देता हूँ।
>
> *प्रपंच व्याप्तंगा उन्न*
> *तेलुगु वारिकी*
> *तेलुगु भाषा दिनोत्सव शुभाकांक्षलु*

तेलुगु भाषा की भाषाई और सांस्कृतिक विरासत का जश्न मनाने के लिए तेलुगु भाषा दिवस या तेलुगु भाषा दिनोत्सवम हर साल 29 अगस्त को मनाया जाता है।

तेलुगु कवि, लेखक और भाषाविद् श्री गिदुगु वेंकट राममूर्ति की जयंती के अवसर पर तेलुगु भाषा दिनोत्सवम क्षेत्रीय और राष्ट्रीय पहचान बनाने में तेलुगु की भूमिका को सम्मान प्रदान करते हुए तेलुगु भाषा के उपयोग को बढ़ावा देता है।

इतिहास

तेलुगु भाषा दिवस मनाने की शुरुआत 1966 में हुई थी। हालाँकि, इस भाषा को पहचान प्रदान करने और इसके समारोह के अवसर बहुत पहले से थे। गिदुगु वेंकट राममूर्ति और कंदुकूरी वीरशलिंगम् पंतुलु जैसे साहित्यिक विद्वानों ने 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत में इस भाषा को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

महत्त्व

तेलुगु का इतिहास दो हजार साल से भी अधिक पुराना है। इस भाषा में पहली लिखित सामग्री 575 ई. से मिलती है। साहित्यिक और भाषाई अध्ययनों में इसकी गहन खोज की गई है और इसकी उत्पत्ति प्राचीन पांडुलिपियों तथा ग्रंथों में अच्छी तरह से प्रलेखित है। सदियों से राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के कारण तेलुगु में महत्त्वपूर्ण विकास हुआ है।

भूमिका

तेलुगु, द्रविड़ भाषा परिवार की सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा है। यह आंध्र प्रदेश और तेलंगाना की आधिकारिक भाषा भी है और भारत की 22 आधिकारिक भाषाओं में से एक है, जिन्हें संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया है। इसे शास्त्रीय भाषा के रूप में भी नामित किया गया है। 2011 की जनगणना के अनुसार, तेलुगु बोलने वालों की संख्या लगभग 8.11 करोड़ है।

विभिन्न आयोजन

भारत सरकार तेलुगु भाषा और इसके सांस्कृतिक महत्त्व को बढ़ावा देने तथा साहित्यिक परम्पराओं के लिए गहरी समझ विकसित करने हेतु कई सांस्कृतिक गतिविधियाँ, शैक्षिक कार्यक्रम, साहित्यिक समारोह और कार्यशालाएँ आयोजित करती है। इस वर्ष, आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू, उपमुख्यमंत्री पवन कल्याण और पर्यटन, भाषा तथा संस्कृति मंत्री कंदुला दुर्गेश ने व्यावहारिक भाषा विज्ञान के जनक श्री गिदुगु वेंकट राममूर्ति को श्रद्धांजलि देने के लिए विजयवाड़ा में राज्य सरकार द्वारा आयोजित राजभाषा दिवस में भाग लिया।

दोहराव, नए या प्रभावी अर्थ बनाने के लिए शब्दों या अक्षरों की पुनरावृत्ति, तेलुगु में आम है। उदाहरण के लिए पकापाका यानी अचानक हँसना; गरगरा यानी साफ, स्वच्छ, अच्छा।

अन्य द्रविड़ भाषाओं की तरह, तेलुगु में रेट्रोफ्लेक्स व्यंजनों की एक शृंखला है, जिसका उच्चारण जीभ को तालु से ऊपर सामने की ओर स्पर्श कर होता है।

तेलुगु पूर्वी दुनिया की एकमात्र भाषा है, जिसमें हर एक शब्द स्वर ध्वनि के साथ समाप्त होता है।

तेलुगु भाषा में सबसे अधिक सामिथलु यानी मुहावरे और कहावतें हैं।

तेलुगु को 'त्रिलिंगा बाशा' के नाम से जाना जाता था, बाद में इसका नाम 'तेलुंगु', 'तेनुगु' पड़ा और अंततः आज हम इसे 'तेलुगु' कहते हैं।

बारेकुरी, तिनसुकिया के हूलॉक गिबंस

स्वप्निल पॉल
भारतीय प्रशासनिक सेवा
जिला आयुक्त, तिनसुकिया

मानव और जानवरों के बीच का सम्बंध पूरे इतिहास में बारम्बार शामिल होने वाला विषय रहा है। शुरुआत से ही दोनों के रहने के स्थान भी साझा पाए गए हैं और इन दोनों के बीच शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व भी बना रहा है। ऐसी ही कुछ कहानियाँ लोककथाओं और मौखिक परम्पराओं के हिस्से के रूप में हमारी स्मृति में अंकित हैं। इनकी अनेक कहानियाँ उपन्यासों और फिल्मों में भी शामिल की गई हैं। सदाबहार फिल्म 'हाथी मेरे साथी' से लेकर 'लाइफ ऑफ पाई' तक, इन सभी कथाओं में मनुष्यों और जानवरों के बीच मानसिक जुड़ाव और भावनात्मक बंधन एकमात्र सामान्य घटक है।

इस संदर्भ में, असम के तिनसुकिया जिले का एक छोटा-सा गाँव– बारेकुरी, मनुष्यों और उनके एक भौं वाले करीबी बंधु-बांधव तुल्य, हूलॉक गिबंस के बीच एक अनोखा बंधन प्रदर्शित करता है। बारेकुरी एक हरा-भरा गाँव है, जो डिब्रू सैखोवा राष्ट्रीय उद्यान के बाहरी इलाके में बेतजान बोराजन पदुमोनी वन्यजीव अभयारण्य के पास स्थित है। गाँव में मुख्य रूप से स्वदेशी मोरान समुदाय रहता है। यह समुदाय एक पारम्परिक संस्कृति और जीवन शैली का पालन करता है, जो पीढ़ियों से संरक्षित और पोषित की गई है। उनका यह लगाव इस सहजीवी मानव-पशु सम्बंध को दर्शाता है। उदाहरण के लिए, वे गोसोर टोलोर बिहू (एक पेड़ के नीचे बिहू) को अपने वार्षिक त्योहार के रूप में मनाते हैं। त्योहार का नाम ही लोगों और प्रकृति के बीच के घनिष्ठ सम्बंध को दर्शाता है। इसमें वृक्ष पर रहने वाले उनके बंधु तुल्य– हूलॉक गिबंस भी शामिल हैं, जो गाँव में रहते हैं।

दशकों पहले, हूलॉक गिबंस का एक समूह पास के वन क्षेत्रों से पलायन कर गया और बारेकुरी में बस गया। इस तरह बारेकुरी को अपना घर बना लिया। पिछले कुछ वर्षों में लोगों ने उनके साथ एक अनोखा रिश्ता विकसित किया है। जब गाँव वालों को पता चला कि गिबंस को केले और खट्टे फल पसंद हैं, तो उन्होंने अपने आस-पास इन्हें लगाना शुरू कर दिया। वे लोग यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि गिबंस भूखे न रहें। गाँव वालों ने गिबंस का नाम भी ऐसे रखा जैसे वे परिवार के सदस्य हों। कालिया और बोगी एक जोड़ा था और ट्विक उनका बेटा था। गाँव वाले अक्सर कहते हैं कि ट्विक जब भी शरारत

करता था, तब कालिया उसे डाँटता था। ट्विक अब नर के रूप में विकसित हो चुका है। जब कुछ साल पहले कालिया की मृत्यु हुई, तो गाँव वालों ने सुनिश्चित किया कि सभी मृत्यु संस्कार और दाह संस्कार उसी श्रद्धा के साथ किए जाएँ जैसे किसी परिवार के सदस्य के लिए किए जाते हैं।

हूलॉक गिबंस का जन्मदिन, खास तौर पर छोटे गिबंस का, गाँव में हर कोई धूमधाम से मनाता है। बारेकुरी के बच्चे अक्सर छोटे गिबंस के साथ खेलते हुए दिखाई देते हैं। इससे वे आजीवन दोस्ती का बंधन बनाते हैं। मध्यम आयु वर्ग के कई गाँव वाले कालिया को प्यार से याद करते हैं। नई पीढ़ी ने छोटे गिबंस को सेल्फी के लिए पोज देने और खुद को आईने में देखने की कला भी सिखाई है।

हाल के दिनों में, बिजली की ट्रांसमिशन लाइनों की नंगी तारों ने गिबंस की आवाजाही में बाधा उत्पन्न की है। पिछले पाँच वर्षों में बारेकुरी क्षेत्र में उच्च वोल्टेज वाले बिजली के झटके से दो हूलॉक गिबंस की मौत भी हो चुकी है। असम के माननीय मुख्यमंत्री के एक दौरे के समय ग्रामीणों ने उन्हें इस मुद्दे से अवगत कराया। असम पावर डिस्ट्रीब्यूशन कम्पनी लिमिटेड द्वारा ट्रांसमिशन लाइन की नंगी तारों को कवर करने के लिए इन्सुलेटेड कंडक्टरों में परिवर्तित करने के उद्देश्य से तुरंत एक परियोजना शुरू की गई। इस परियोजना से ग्रामीणों और गिबंस दोनों को अपनी आवाजाही के क्रम में बड़ी राहत मिली है।

हाल के दिनों में, ग्रामीणों ने यह भी महसूस किया है कि बाहरी लोगों द्वारा दिया जाने वाला भोजन गिबंस को सुस्त और कमजोर बनाता है। इसलिए, समुदाय ने हाल ही में गिबंस को बाहर का खाना न देने के लिए एक अभियान शुरू किया है। संरक्षण के इस प्रयास ने अपने देश और विदेश से आने वाले पर्यटकों का ध्यान आकर्षित किया है। इस प्रयास से स्थानीय समुदाय का समर्थन करने के लिए 'ब्रेड एंड ब्रेकफास्ट' मॉडल में होमस्टे को बढ़ावा मिला है।

इसके अतिरिक्त गिबंस की गतिशीलता को व्यापक क्षेत्र में बढ़ाने की आवश्यकता महसूस की जा रही है, ताकि उनके जीन पूल को समृद्ध और सब सम्वंद्धित किया जा सके। इसलिए बारेकुरी को आस-पास के वन क्षेत्रों से जोड़ने के लिए उपयुक्त किस्म के पेड़ों के साथ गिबंस के लिए एक हरित गलियारे के निर्माण की सम्भावना का पता लगाया जा रहा है।

वास्तव में बारेकुरी इस बात का उदाहरण है कि साथ मिलकर जीने की ऐसी सशक्त और जैविक विरासत के साथ सतत विकास सुनिश्चित करते हुए और पारम्परिक जीवन शैली को संरक्षित करते हुए कैसे एक समुदाय पर्यावरण संरक्षण में योगदान दे सकता है।

वन्यजीव संरक्षण में क्रांतिकारी बदलाव

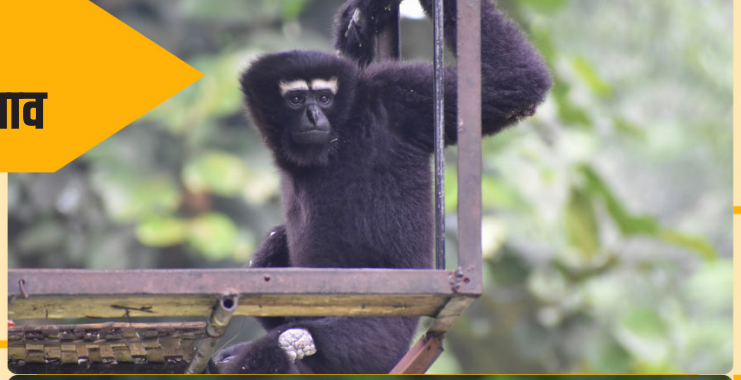

"असम में तिनसुकिया जिले के छोटे से गाँव बारेकुरी में, मोरान समुदाय के लोगों का हूलॉक गिबंस के साथ बहुत गहरा सम्बंध है, जिन्हें यहाँ स्थानीय तौर पर 'होलो बंदर' कहा जाता है। इस गाँव के लोगों ने इस सम्बंध को संरक्षित करने के लिए तय किया कि गिबंस के जन्म और मृत्यु से जुड़े रीति-रिवाज़ों को वैसे ही पूरा करेंगे, जैसा वे अपने लोगों के लिए करते हैं।"

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ('मन की बात' सम्बोधन में)

भारत की एकमात्र वानर प्रजाति हूलॉक गिबंस पूर्वोत्तर राज्यों, मुख्य रूप से असम, अरुणाचल प्रदेश और नगालैंड में पाई जाती है। अपनी विशिष्ट आवाज और कलाबाजी के लिए जाने जाने वाले ये प्राइमेट वनों की कटाई, आवास विखंडन और मानवीय हस्तक्षेप के कारण लुप्तप्राय हैं।

रिपोर्टों के अनुसार, भारत में अब अधिकतम 10,000 गिबंस बचे हैं। असम में, खास तौर पर बारेकुरी गाँव में मोरान समुदाय ने इन गिबंसों की रक्षा करने का बीड़ा उठाया है। सह-अस्तित्व के एक उल्लेखनीय प्रदर्शन में, ग्रामीणों ने इन प्राइमेट की रक्षा के लिए अपनी जीवनशैली को अनुकूलित किया है, यहाँ तक कि उन्हें खिलाने के लिए केले उगाए हैं और बिजली के तारों जैसी खतरनाक समस्याओं से निजात पाने के लिए ठोस समाधान ढूँढे हैं। आइए देखें कि बारेकुरी गाँव के स्थानीय लोगों का गिबंसों के साथ अपने अनोखे सम्बंध के बारे में क्या कहना है?

"हम 'मन की बात' में बारेकुरी के हूलॉक गिबंस के संरक्षण प्रयासों के बारे में चर्चा करने के लिए प्रधानमंत्री मोदी के प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं।

बारेकुरी के लोग हूलॉक गिबंस को परिवार के सदस्यों की तरह मानते हैं और बड़े स्नेह से उनकी देखभाल करते हैं। दुख की बात है कि बिजली के तारों के सम्पर्क में आने से कई गिबंसों की जान चली गई। इसके बाद, हमारे संगठन के साथ ग्रामीणों ने सरकारी अधिकारियों से बात की, जिसके बाद असम सरकार के बिजली विभाग ने इसका समाधान निकाला। उन्होंने गिबंस को बचाने के लिए एक अभिनव शॉकप्रूफ वायरिंग सिस्टम पेश किया।

देश के अन्य हिस्सों और विदेशों से भी दूर-दूर से लोग हूलॉक गिबंस को देखने के लिए बारेकुरी आते हैं। यहाँ पर्यटन की एक नई लहर विकसित हो रही है। हूलॉक गिबंस का अध्ययन करने के लिए कई शोधकर्ता भी यहाँ आए हैं।"

-डिप्लोब चुटिया
अध्यक्ष, बारेकुरी इको डेवलपमेंट कमेटी

"अरुणाचल में हमारे कुछ युवा साथियों ने 3-डी प्रिंटिंग तकनीक का उपयोग करना शुरू किया है, जानते हैं क्यों? क्योंकि, वो वन्य जीवों को सींगों और दाँतों के लिए शिकार होने से बचाना चाहते हैं। नाबम बापू और लिखा नाना के नेतृत्व में ये टीम जानवरों के अलग-अलग हिस्सों की 3-डी प्रिंटिंग करती है।"

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 'मन की बात' सम्बोधन में

अरुणाचल प्रदेश के सुदूर और वन्यजीव-समृद्ध क्षेत्र में नाबम बापू और लिखा नाना जैसे नवोन्मेषी उद्यमी लुप्तप्राय प्रजातियों की रक्षा और आदिवासी परम्पराओं को संरक्षित करने के लिए 3-डी प्रिंटिंग तकनीक का उपयोग कर रहे हैं। अपने स्टार्टअप, एआईओ प्राइवेट लिमिटेड के माध्यम से उन्होंने जानवरों के अंगों, जैसे सींग, दाँत और जबड़े की 3-डी मुद्रित प्रतिकृतियों के उत्पादन का बीड़ा उठाया है, जिनका पारम्परिक रूप से स्थानीय न्यिशी जनजाति द्वारा सांस्कृतिक पोशाक के लिए उपयोग किया जाता था।

पॉलीलैक्टिक एसिड जैसी सामग्रियों, जिसे आमतौर पर पीएलए और प्लांट-बेस्ड रेजिन के रूप में जाना जाता है, इससे बने बायोडिग्रेडेबल विकल्पों की पेशकश करके उनके प्रयासों का उद्देश्य वन्यजीवों के अवैध शिकार को कम करना और एक स्थायी समाधान प्रदान करना है, जो वन्यजीव संरक्षण के साथ सांस्कृतिक संरक्षण को संतुलित करता है। इस अभिनव कार्य ने पहले से ही हॉर्नबिल और बाघ जैसे जानवरों की हत्या में महत्त्वपूर्ण कमी ला दी है। यह प्रयास विरासत और जैव विविधता, दोनों की सुरक्षा में प्रौद्योगिकी की परिवर्तनकारी क्षमता को प्रदर्शित करता है।

"हमें बेहद खुशी है कि हमारे काम की हमारे माननीय प्रधानमंत्री ने सराहना की है और इसे स्वीकार किया है। हम अपने स्टार्टअप, एआईओ प्राइवेट लिमिटेड के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए और अधिक प्रोत्साहित और दृढ़ हैं।

जंगली जानवरों, विशेष रूप से हॉर्नबिल, क्लाउडेड लेपर्ड और टाइगर जैसी लुप्तप्राय प्रजातियों को बचाना हमेशा से एक विवादास्पद मुद्दा रहा है, खासकर अरुणाचल प्रदेश जैसे आदिवासी राज्य में, जहाँ परम्परा और संस्कृति का बहुत महत्त्व है। इन परम्पराओं को आदिवासी पहचान का अभिन्न अंग माना जाता है और जानवरों के अंगों का उपयोग सांस्कृतिक संरक्षण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इनकी हत्या इसलिए नहीं रुकी, क्योंकि उस समय कोई विकल्प उपलब्ध नहीं था। अब एआईओ प्राइवेट लिमिटेड ने एक विकल्प बनाया है, जो हमारे आदिवासी समुदायों द्वारा वन्यजीवों को नुकसान पहुँचाए बिना अपनी संस्कृति को संरक्षित करने की अनुमति देता है।

आज तक हमने टाइगर जॉं, लेपर्ड जॉं और हॉर्नबिल बिल को सफलतापूर्वक बनाया और बाजार में उतारा है, साथ ही कई और उत्पाद विकास के चरण में हैं।"

-नाबम बापू,
लिखा नाना- एआईओ प्राइवेट लिमिटेड के संस्थापक

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

Dr Jitendra Singh @DrJitendraSingh · Aug 25

On the 23rd of August, the nation marked the first National Space Day, celebrating the success of Chandrayaan-3.

Last year, on this day, Chandrayaan-3 had made a successful landing on the southern part of the moon at the Shiv-Shakti point.

PM Sh @NarendraModi

#MannKiBaat

IIT Madras @iitmadras · Aug 25

Hon'ble PM Shri @narendramodi in #MannKiBaat celebrated #NationalSpaceDay, praising #Chandrayaan3's success and the rise of #startups llke @iitmadras incubated @GalaxEye

Watch the full video here: youtu.be/qS4vb940zVg

Ramesh Bidhuri @rameshbidhuri

The heartwarming connection between Barekuri villagers in Assam and hoolock gibbons... #MannKiBaat

econscious ® @econsciousindia

We are beyond thrilled to share that our startup, @econsciousindia was featured on #MannKiBaat hosted by our Hon'ble #PMOIndia Shri @narendramodi ji. We extend gratitude for this incredible recognition & want to thank each and every stakeholder involved in our journey #startup

Suyash Singh @thesuyashsingh · Aug 25

Honourable PM @narendramodi Ji, Thanks a ton for having us on #MannKiBaat

12 mins spent with you, gives us confidence to work more harder and put India on top of the global Space economy.

The entire team of @GalaxEye is privilledged for the opportunity. 🙏

Annapurna Devi @Annapurna4BJP · Aug 25

"पिछले वर्ष पोषण अभियान को नई शिक्षा नीति से भी जोड़ा गया है। 'पोषण भी पढ़ाई भी' इस अभियान के द्वारा बच्चों के संतुलित विकास पर focus किया गया है। आपको भी अपने क्षेत्र में पोषण के प्रति जागरूकता वाले अभियान से जरूर जुड़ना चाहिए।" : प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी #MannKiBaat

GalaxEye @GalaxEye

Today is the most memorable day for us at @GalaxEye, building India's first private imaging #Satellite!

What started as a story of 5 friends, is now a project of interest to our Hon'ble PM @narendramodi. As he fondly said, our tech will be utilized aligning to #JaiJawanJaiKisan!

Dharmendra Pradhan @dpradhanbjp

A space startup @GalaxEye, incubated at @iitmadras, is working wonders in next-gen technologies. Creating an ultra-high resolution imaging satellite to assist with farming and defense, these young innovators are ready to make big waves in the space sector. Their interaction with PM Shri @narendramodi ji during today's #MannKiBaat showcases the prowess of India's youth. PM Modi's fillip to technology-driven startups and liberalized space policy is poised to propel India as a prominent global space power and ensure for our youth that sky is not the limit.

EcoKaari™ - Humanising Fashion @EcoKaari

Thank you, @PMOIndia @narendramodi, for mentioning our Upcycling initiative on your incredible @mannkibaat platform. Your acknowledgement means the world to us and motivates us to continue our mission of sustainability and empowerment. 🙏

Himanta Biswa Sarma @himantabiswa

Hon'ble Prime Minister, thank you for bringing out these unique stories from Assam and Arunachal Pradesh to the nation's attention. Your recognition and appreciation of the sustainable living practices will encourage millions to adopt this lifestyle and care for our animals. #MannKiBaat

Lithuania in India @LTEmbassyDelhi · Aug 25

A proud moment for Lithuania! as Hon'ble @PMOIndia Shri @narendramodi narrates to India and the World how #SanskritLithuanian linguistic ties are nurtured & celebrated in Lithuania on #ManKiBaat @AkashvaniAIR @DMickevicIene @LithuaniaMFA @MEAIndia @IndEmbVilnius @VU_LT

> **Narendra Modi** @narendramodi · Aug 25
> Today, there is a growing global interest in learning Sanskrit. You will be elated to hear about an effort in Lithuania. #MannKiBaat

Pema Khandu @PemaKhanduBJP · Aug 28

In his recent #MannKiBaat, Hon PM Shri @narendramodi Ji commended the remarkable work of **Nabam Bapu** and Likha Nana from Arunachal Pradesh. Their innovative use of 3D printing to replicate animal parts like horns, beaks, tusks, and teeth ~ traditionally used in apparel and

Show more

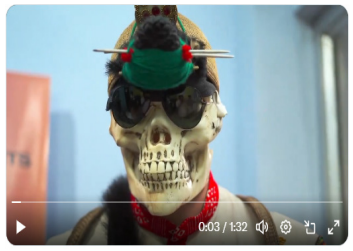

Shivraj Singh Chouhan @ChouhanShivraj

बच्चों का nutrition, देश की प्राथमिकता है।

हमारा परिवार, हमारा समाज, और हमारा देश, एवं इन सबका भविष्य, हमारे बच्चों की सेहत पर निर्भर है और बच्चों की अच्छी सेहत के लिए जरूरी है कि उन्हें सही पोषण मिलता रहे।

- आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी

#MannKiBaat

Swachh Bharat Urban @SwachhBharatGov · Aug 26

Transforming #WastetoWealth

Sanitation workers in MP's **Jhabua**, earned a special mention in PM Modi's radio program #MannKiBaat for their incredible creativity. They've turned plastic waste, tyres, and pipes into stunning artworks for a park like cars, benches. #SwachhBharat

CMO Rajasthan @RajCMO

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 'मन की बात' कार्यक्रम के 113वें संस्करण में देशवासियों को संबोधित किया। मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा ने भी जोधपुर के एस एन मेडिकल कॉलेज सभागार में आमजन के साथ प्रधानमंत्री के सम्बोधन को सुना।

#RajCMO

#CMORajasthan

Translate post

Dr Mansukh Mandaviya @mansukhmandviya

माननीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी ने #MannKiBaat कार्यक्रम में फिटनेस के महत्व पर प्रकाश डाला और श्रीअन्न को अपनाने के साथ-साथ @FitIndiaOff के माध्यम से देशवासियों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए और स्वस्थ भारत के निर्माण में योगदान देने के लिए जागरूक किया।

Translate post

Harsh Sanghavi @sanghavlharsh

Our Hon'ble PM Shri @narendramodi ji's words resonate loud & clear!

Let's keep the spirit of patriotism alive, every day, in every way!

#MannKiBaat #TirangaInOurHearts

> **Narendra Modi** @narendramodi · Aug 25
> This year again, #HarGharTiranga was a remarkable success, a mass movement that deepened our connect with the Tricolour. #MannKiBaat

Kiren Rijiju @KirenRijiju

अरुणाचल प्रदेश के ईस्ट-कामेंग ज़िले में 600ft लम्बे तिरंगे के साथ हर घर तिरंगा की यात्रा निकाली गई:

अरुणाचल में हमारे कुछ युवा-साथियों ने 3-D printing technology का उपयोग करना शुरू किया है: प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी

#MannKiBaat #ArunachalPradesh

Translate post

Prakash Javadekar @PrakashJavdekar

बच्चों का nutrition देश की प्राथमिकता है...

#MannKiBaat #PMModi

@PMOIndia @narendramodi @mannkibaat @BJP4India

Translate post

Bhupendra Patel @Bhupendrapbjp

सुखी परिवार, सुखी राज्य और सुखी देश का आधार है स्वस्थ नागरिक.. और नागरिकों के स्वास्थ्य का आधार है पोषण।

देशभर में पूरा सितंबर महीना पोषण माह के रूप में मनाया जाएगा। बच्चों, माताओं और किशोरियों को सही पोषण मिले उस पर पूरा जोर दिया जाएगा।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने आज #MannKiBaat कार्यक्रम में सभी नागरिकों को पोषण के इस अभियान के साथ यथासंभव जुड़ने का आहवान किया है।

Translate post

PM urges youth to join politics, ensure transformative future

Modi's appeal to youth with no political lineage to join politics saw "positive response"

स्पेस टेक्नोलॉजी से होगा 'जय जवान' और 'जय किसान': मोदी

नई दिल्ली (आईएएनएस)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को मन की बात कार्यक्रम के दौरान स्पेस सेक्टर में भारत की उपलब्धियों पर रोशनी डाली। उन्होंने कहा कि 23 अगस्त को ही सब देशवासियों ने पहला 'नेशनल स्पेस डे' मनाया। प्रधानमंत्री ने कहा, पिछले बार इसी दिन चंद्रयान 3 ने चांद के दक्षिणी हिस्से में शिव शक्ति पॉइंट पर सफलतापूर्वक लैंडिंग की थी। भारत इस गौरवपूर्ण उपलब्धि को हासिल करने वाला दुनिया का पहला देश बना है। उन्होंने कहा कि 21वीं सदी के भारत में कितना कुछ हो रहा है जो विकसित भारत की नींव मजबूत कर रहा है। प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' के इस एपिसोड में स्पेस सेक्टर से जुड़े आईआईटी मद्रास के पूर्व छात्रों के स्टार्टअप 'गैलेक्सी -ई' के युवाओं से बात की। प्रधानमंत्री ने इन युवाओं से पूछा कि आपकी टेक्नोलॉजी से देश को कितना लाभ होने वाला है? छात्रों ने बताया कि उनकी यह टेक्नोलॉजी अंतरिक्ष से बादलों के आरपार देख सकती है। इस तकनीक की मदद से रात के समय भी स्पष्ट देखा जा सकता है। इससे देश के किसी भी कोने के ऊपर रोज एक साफ तस्वीर खींच सकते हैं।

गैर राजनीतिक पृष्ठभूमि के युवा सियासत में आगे आएं : मोदी

मन की बात : पीएम ने कहा-विकसित भारत के लिए आजादी की लड़ाई जैसी भावना जरूरी

'Space reforms benefited youth'

PM Narendra Modi, in the 113th episode of his monthly radio address 'Mann Ki Baat', praised the advancements in the country's space sector and said Indian youth have vastly benefited from space sector reforms. "A lot is happening in 21st-century India, which is strengthening the foundation of Viksit Bharat. For example, on Aug 23, all the countrymen celebrated the first National Space Day. Once again, you all must have celebrated the success of Chandrayaan-3. Last year, on this day, Chandrayaan-3 landed at the Shiv-Shakti point on the moon's southern hemisphere, making India the first country to achieve this feat," the PM said. TNN

Mann Ki Baat: Modi pushes for start-ups in space and eco sectors

Our Bureau
New Delhi

Prime Minister Narendra Modi

Prime Minister Narendra Modi on Sunday emboldened the youth and the start-up community which works in the space and environment sectors.

In his 113th episode of *Mann Ki Baat*, he interacted with a team from spacetech start-up GalaxEye, founded by the alumni of IIT-Madras.

"On August 23, India celebrated the first National Space Day... Last year, on this day, Chandrayaan-3 landed on the southern part of the moon at the Shiv-Shakti point, making India the first nation in the world to achieve this feat," Modi said.

Speaking about a young team from Arunachal Pradesh, he said, "Led by Nabam Bapu and Likha Nana, the team undertakes 3-D printing of various parts of animals, be it horns or teeth. These are then made into items such as apparel and headgear."

ON RECYCLING

Shifting focus to organisations that focus on the environment, Modi said, "There is a team called e-conscious that is turning plastic waste into eco-friendly products. This idea struck them when they saw tourist places, especially in hilly areas, strewn with litter. Another startup is named Ecokaari."

Toy recycling is another field, which Modi believes, can be worked on.

"While many children get bored of their toys in no time, there are children who dream for such toys. Toys that your children no longer play with... you can give them away," he noted.

NUTRITION MONTH

Throwing light on children's nutrition, the Prime Minister said, "Nutrition Month is celebrated in September. Awareness on nutrition is spread through nutrition fairs, anaemia camps, home visits for newborn babies, seminars, and webinars. In several areas, mother and child committees have been established under anganwadis which track malnourished children, pregnant women and newborn babies."

विकसित भारत के लिए युवा आगे आएं, आकाश में लहराया तिरंगा

दैनिक सवेरा टाइम्स

PM MODI ने देशवासियों से की मन की बात, हाइपरलूप प्रोजेक्ट का किया जिक्र, युवाओं ने बताया कैसे आया ख्याल

Hindustan Times

PM reiterates need for brining youth, non-dynasts into politics

हिन्दुस्तान

मन की बात में पीएम मोदी ने की देश की दिशा बदल रहे स्टार्टअप्स की चर्चा, झाबुआ के सफाईकर्मियों की तारीफ

IBC24

Mann Ki Baat 113th: मन की बात में पीएम मोदी ने किया 'हूलॉक गिबन' जिक्र, जहां ग्रामीण बढ़ा रहे वन्य जीवों से दोस्ती

india.com

Mann Ki Baat: PM Modi Highlights 'Fit India,' Emphasizes Children's Nutrition As National Priority

Jagran

'Strengthening Foundation Of Viksit Bharat': PM Modi Hails Space Sector Achievements In Mann Ki Baat

NBT नवभारत टाइम्स

हेलीकॉप्टर, कार और तोप... कचरे से बनी कलाकारी के मुरीद हुए पीएम मोदी, एमपी के सफाई कर्मचारियों की खूब की तारीफ

NDTV

India Can Never Forget Chandrayaan-3 Achievement: PM Modi In 'Mann Ki Baat'

newsX

Mann Ki Baat Highlights, From Galexeye To Toy Recycling, PM Modi Emphasizes On Eco- Friendly Initiatives

Odishatv.in
We Report, You Decide

For developed India, guarantee of accessible justice to all is important: PM Modi

oneindia

'मन की बात' के 113वें एपिसोड में PM ने किया 'हूलॉक गिबन' का जिक्र, सुनाई इंसान-जानवर के रिश्ते की सच्ची कहानी

R.भारत

'कोने-कोने से आई अद्भुत तस्वीरें, मन खुशी से झूम उठा', हर घर तिरंगा अभियान पर बोले PM मोदी

THE HINDU

Founders of Bengaluru-based space tech start-up apprise PM Modi about multi-sensor imaging satellite technology

United News of India
Brevity Accuracy Speed

PM hails Arunachal youth for using 3-D printing technology to protect wildlife

मन की बात

के सभी संस्करणों को पढ़ने के लिए
QR कोड को स्कैन करें।

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार